Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ ॥

वैदिक रुद्रार्चन पद्धतिः

सम्पादकः
डॉ० सन्दीप भट्टः
वेदाचार्यः, साहित्यचार्यः, पी-एच.डी.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ अथ ॥

वैदिक रुद्रार्चन पद्धतिः

प्रकाशकः

अरविन्द सेमवाल

सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस

रेलवे रोड, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)

प्रथम संस्करण :

16 जुलाई सन् 2019

द्वितीय संस्करण :

20 जून सन् 2021

ज्येष्ठा शुक्ल (गंगा दशहरा)

सम्पादकः

डॉ. सन्दीप भट्ट

मो.– 9997969755

पुस्तक प्राप्ति स्थानः

धार्मिक पुस्तक भण्डार

घाट रोड, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)

मो. : 9897274427, 9897520609



मूल्य ₹ 50/-

ISBN : 978-81-953463-0-1

मुद्रक : सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, रेलवे रोड, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)

डॉ0 राममूर्ति चतुर्वेदी

एसो0 प्रोफेसर संस्कृतविभाग

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,

वाराणसी



शुभाशीर्वचांसि

आयुष्मान् डा0 सन्दीप भट्ट द्वारा सम्पादित वैदिक रुद्रार्चन पद्धति भगवान् आशुतोष की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए श्रुति सम्मत तथा लोक सम्मत पूजा पद्धति प्रमाणित होगी. इस मंगलकामना के साथ अपने प्रिय शिष्य ग्रन्थ सम्पादक को साधुवाद संप्रेषित करता हूँ।

प्रो0 राम मूर्ति चतुर्वेदी

काशी

प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः
Prof. Ramesh Kumar Pandey
Vice Chancellor



श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
ए ग्रेड (नैक)
बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110 016 (भारत)
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
(Central University)
'A' Grade (NAAC)
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110 016 (INDIA)

पत्र संख्या–लाबशा./वी.सी./2021/66.   दिनांक : 23.03.2021

नैवेद्यम्

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" वेद सम्पूर्ण धर्म के मूल हैं। भारतीय संस्कृति एवं सनातन जीवन पद्धति में वेदों का मूर्धन्य स्थान है। ईश्वर को न मानने पर भी मानव नास्तिक नहीं कहलाता, जबकि वेदों की निन्दा करने पर वह नास्तिक बन जाता है, यह भाव वेदों की गुरुता को प्रमाणित करता है। महात्मा मनु ने वेदनिन्दक को नास्तिक कहा है-**"नास्तिको वेदनिन्दकः"** ।

"अपौरुषेयं वाक्यं वेदः" यह वचन भी वेदों के अनादित्व एवं दिव्यत्व का परिचायक है। वेदों का मानव जीवन पर अद्भुत एवं अकल्पनीय प्रभाव होता है। वेदोक्त एक एक मन्त्र परमकल्याण एवं परमात्मप्राप्ति के अनन्यसाधन हैं। इन मन्त्रों की महिमा से मनुष्यों के समस्त मनोरथ परिपूर्ण होते हैं।

वैदिक वाङ्मय के सुप्रतिष्ठित आचार्यों ने वेदमन्त्रों के उच्चारण एवं जप की विशिष्ट विधि का प्रतिपादन किया है। यज्ञानुष्ठान में विधि का अत्यन्त महत्त्व है, विधि ही फलाफल के विवेक में नियामक है। अतः सविधि यज्ञानुष्ठान ही श्रेय एवं प्रेय के साधन होते हैं। विधि-विहीन मन्त्रोच्चारण एवं यज्ञानुष्ठान अभीष्ट फलप्रदायक नहीं होते ऐसा आचार्यों का मत है। स्वयं भगवान् ने भी गीता में कहा है-**विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥** (गीता-17/13)

वेद के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. सन्दीप भट्ट जी ने **वैदिकरुद्रार्चनपद्धति** ग्रन्थ का परिश्रमपूर्वक सम्पादन किया है। मैं इनके परिश्रम की भूरिशः प्रशंसा करता हूँ। इस ग्रन्थ के अध्ययन-मनन तथा इसके द्वारा किये गये रुद्रार्चन से भगवान् महादेव की साक्षात् कृपा अवश्य प्राप्त होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं ग्रन्थ के विधिवत् सम्पादन हेतु डॉ. सन्दीप भट्ट जी को अपनी शुभकामनाएँ समर्पित करता हूँ। आपके द्वारा इसी तरह के समाज कल्याणकारी सारस्वत प्रयत्न निरन्तर सम्पादित होते रहें, ऐसी मंगल प्रार्थना भी करता हूँ।

रमेशकुमारपाण्डेय
(रमेशकुमार पाण्डेय)

Ph. : 011-26851253, 26564003, Fax : 011-26520255
E-mail : profrkpandey@yahoo.co.in, vcslbsrsv@yahoo.co.in

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
अध्यक्षः, शोधविभागः

Prof. Shiv Shankar Mishra
Head, Department of Research



श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः) 'ए' ग्रेड (नैक)
बी-४, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-११० ०१६ (भारत)

Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
(Central University) 'A' Grade (NAAC)
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi-110 016 (INDIA)

पत्र संख्या-LBSU/R&P/08/2021/95 दिनांक : 23.03.2021

शुभाशंसा

• स्वस्ति पन्थामनुचरेम, • भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम, • तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु, • मधुमती वाचमुदेयम्, • मा नो द्विक्षत कश्चन, • भद्रं मनः कृणुष्व इत्यादि आत्मकल्याण मूलक वचनपुञ्ज भगवान् वेद की महत्ता को प्रतिपद प्रतिष्ठित एवं महिमामण्डित करते हैं।

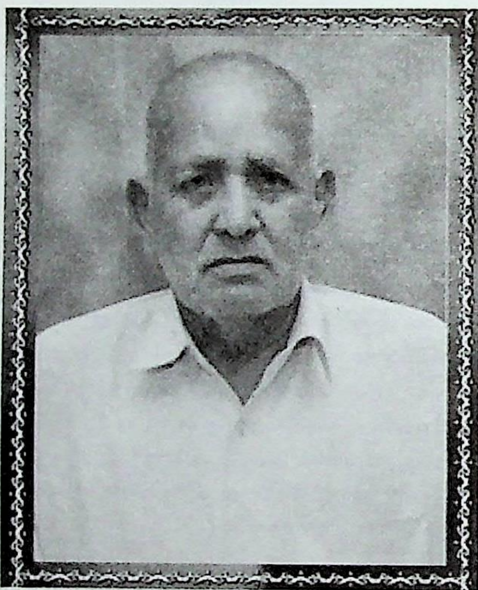
वेद भारत के परम वैभव हैं, जिनके आलोक में हमारा यह देश विश्वगुरु बनकर समग्र मानवता का मार्गदर्शन किया है। वेद समाधान हैं ऐसी हर समस्या का जिनसे मनुष्य उद्विग्न एवं व्यथित है। वेद हमें लोक का परिचय कराते हुए परलोक का पथ प्रशस्त करते हैं।

वैदिक मन्त्रों की अपरिमित ऊर्जा हमें निश्चित ही पूर्णता प्रदान करती है, किन्तु मन्त्रनिहित शक्ति का उद्घाटन तभी सम्भव है जब हम मन्त्र का विधिवत् सस्वर पाठ एवं जप करें। विधिशून्य अशुद्धपाठ यज्ञानुष्ठान की महिमा एवं गरिमा को लघुता प्रदान करते हैं। पाठ एवं जप की इसी विसंगति को हृदयंगम कर वेदविद्या के अध्येता अत्यन्त विनम्र, सरलता एवं सहजता से सम्पन्न डॉ. सन्दीप भट्ट जी ने शिवोपासना हेतु स्वरसहित, दोषरहित सावहित मन से "वैदिक रुद्रार्चनपद्धति" ग्रन्थ का सम्पादन किया है। यह एक प्रामाणिक ग्रन्थ है इसका सम्पादन कर डॉ. भट्ट जी ने लोकोपकारी एक विशिष्ट सारस्वत प्रयत्न किया है। मैं इनके इस बौद्धिक परिश्रम की भूरिशः प्रशंसा करते हुए इनके मंगलमय अभ्युदय की भगवान् से प्रार्थना करता हूँ।

(शिवशङ्कर मिश्र)

Ph.: 011-26060609, 9411171081, 9456328499
E-mail: ssmishralbs@gmail.com, shodhaprabhalbs@gmail.com

समर्पणम्



गौलोकवासी श्री रामकिशोर भट्ट

॥ अथ ॥

वैदिक रुद्रार्चन पद्धतिः

विषय-सूची

प्राक्कथन

"वेदोखिलो धर्ममूलम्"

ब्रह्मा कृतयुगे देवः, त्रेतायां भगवान रविः।
द्वापरे भगवान विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः।।
गणनाथसरस्वतीरविरुद्र बृहस्पतीन्।
पंचैतान् संस्मरेन्नित्यं वेदवाणीं प्रवर्तये ।।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

गुरुवर्याः प्रपूज्याः श्रीराममूर्तिमहोदयाः।
मान्याः कृष्णकिशोरा च यतोधीता श्रुतिर्मया।।
उभयेषामपीड़यानामभिवन्दे पदाम्बुजम्।
यदनुग्रहतोऽवाप्ता विद्या यायात् प्रकृष्टताम्।।

सभी प्रकार के श्रौत-स्मार्त धर्मों का मूल वैदिक वाङमय है। यही सर्वविध ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। कहीं-कहीं वेदो को "वेदः शिवः शिवोवेदः" शिव रूप में स्वीकारा है। इस लिये वेद मन्त्रों से भगवान शिवजी का पूजन एवं अभिषेक, यज्ञ, जप इत्यादि किया जाता है। वेदों एवं पुराणों में रुद्र देवता का वर्णन बहुत है। परब्रह्म परमेश्वर रुद्रापरपर्याय शिव की संस्तुति वेद मन्त्रों में एकादश अनुवाकों में की गयी है, जो रुद्रा ध्याय के नाम से प्रसिद्ध है। रुद्रध्याय के आरम्भ में भगवान रुद्र के बहुत से नाम चतुर्थी विभक्ति में प्रयुक्त है नमो नमः शब्दों से बार-बार दुहराये लाने के कारण इस अध्याय का नाम नमकम् पड़ा । इसी प्रकार अन्तिम प्रपाठक के मन्त्रों में भगवान रुद्र से अपनी मनचाही वस्तुओं की प्रार्थना

'चमे चमे' अर्थात् यह भी मुझे शब्दों की पुनरावृत्ति के साथ की गयी इस लिये इसका नाम चमकम् पडा इन दोनों नमक-चमको का समष्टि रुप रुद्राध्याय है। प्राचीन काल से ऋषि-मुनियों ने वेदोक्त मन्त्रों के द्वारा यथावत् आराधन करके लौकिक एवं पारलौकिक समृद्धि को प्राप्त किया था, हमारे जीवन में भी इसकी प्राप्ति के लिये वेदोक्त रुद्रार्चन पद्धति लघु पुस्तक को सरल एवं सर्वजन प्रिय हो ऐसा प्रयास किया गया है' इस पुस्तक में सम्पूर्ण शिव परिवार पूजन की सरल विधि है' आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी विप्रबन्धु को लाभप्रद होकर हमारा उत्साहवर्धन करेगी। इस पुस्तक में कोई भी त्रुटि हो अगामी प्रकाशन के लिये सूचित करेंगे।

आभार-इस ग्रन्थ के सम्पादन के लिये प्रात:स्मरणीय पूजनीय नित्य वन्दनीय स्वामी श्री चिदानन्द सरस्वती जी महाराज को भी दण्डवत् प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद से यह कार्य पूर्ण हुआ।

सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस को भी मैं विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने शुद्ध रूप से टाईपिंग का कार्य किया और "**वैदिक शिवार्चन पद्धति**" को यथासमय पर प्रकाशित किया।

'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।।

20 जून सन् 2021
ज्येष्ठा शुक्ल (गंगा दशहरा)

विदुषामनुचरः-
डॉ0 सन्दीप भट्टः
वेदाचार्यः, साहित्याचार्यः
पी-एच0डी

रुद्राष्टाध्यायी का संक्षिप्त अवलोकन

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" भगवान मनु के अनुसार भगवान् वेद सब धर्मों के मूल है। शुक्लयजुर्वेद संहिता के अन्तर्गत रुद्राष्टाध्यायी के रूपमें भगवान् रुद्र का विशद वर्णन है।

भक्त लोग रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्रपाठ के साथ जल, कुशोदक, दुध, दही, इक्षुरस, गंगाजल, आदि से भगवान् शिव का अभिषेक करते हैं।

शिवपुराण में सनकादि ऋषियों के प्रश्न पर भगवान् शिव ने स्वयं रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्रों द्वारा अभिषेक का माहात्म्य बतलाया है।

भगवान् शिव का अभिषेक गाय के सींग से करने का विशेष महत्व बतलाया गया हे-

शिवं गवयश्रृंगेण केशवं शंखवारिणा।
विघ्नेशं ताम्रपात्रेण स्वर्णेन जगदम्बिकाम्।।

अर्थात्- गाय के सींग से शिव का अभिषेक, शंख के जल से केशव का अभिषेक, ताम्र के पात्र से गणेश का अभिषेक और सुवर्ण के पात्र से जगदम्बा का अभिषेक प्रशस्त कहा गया है।

महर्षियाज्ञवल्क्य जी कहा है-

रुद्रैकादशिनीं जप्त्वा तदह्नैव विशुद्धयति।

अर्थात्-ग्यारह बार रुद्राध्याय का पाठ करने से मनुष्य उसी दिन पवित्र हो जाता है।

मनसा वाचा कर्मणा शुचिः संगविवर्जितः।
कुर्याद्रुदाभिषेकं च प्रीतये शूलपाणिनः।।
सर्वान् कामानवाप्नोति लभते परमां गतिम्।
नन्दते च कुलं पुंसां श्रीमच्छम्भुप्रसादतः।।

धर्मशास्त्र के विद्वानों ने रुद्राष्टाध्यायी के छः अंग निश्चित किये है,जो निम्न है-

शिवसंकल्पो हृदयं सूक्तं स्यात्पौरुषं शिरः।
प्राहुर्नारायणीयं च शिखा स्याच्चोत्तराभिधम्।।

आशु : शिशानः कवचं नेत्रं विभ्राड्वृहत्स्मृतम्।
शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षङ्गक्रम ईरितः।।
हृच्छिरस्तु शिखा वर्म नेत्रं चास्त्रं महामते।
प्राहुर्विधिज्ञा रुद्रस्य षङ्गानि स्वशास्त्रतः ।।

अर्थात् रुद्राष्टाध्यायी के प्रथमाध्याय का शिवसंकल्पसूक्त हृदय है। द्वितीयाध्याय का पुरुषसूक्त शिर एवं उत्तरनारायणसूक्त शिखा है। तृतीयाध्याय का अप्रतिरथसूक्त कवच है। चतुर्थाध्याय का मैत्रसूक्त नेत्र है एवं पञ्चमाध्याय का रुद्रसूक्त अस्त्र कहा जाता है।

जिसप्रकार एक योद्धा युद्ध में अपने अंगो एवं आयुधों को सुसज्जति कर सावधान करता है, उसी प्रकार अध्यात्ममार्गी साधक रुद्राष्टाध्यायी के पाठ एवं अभिषेक के लिये सुसज्जित होता है। अतः हृदय, सिर, शिखा, कवच, नेत्र, अस्त्र इत्यादि नामाभिधान दृष्टिगोचर होते हैं।

रुद्राष्टाध्यायी के प्रत्येक अध्याय का विचार करें-

प्रथमाध्याय का प्रथम मन्त्र '**गणानां त्वा गणपतिं हवामहे**' बहुत प्रसिद्ध है। कर्मकाण्ड के विद्वान् इस मन्त्र का विनियोग श्रीगणेश जी ध्यान पूजन में करते हैं। शुक्लयजुर्वेद- संहिता के भाष्यकार श्रीउव्वट महीधराचार्य ने इस मन्त्र का एक अश्वमेध-यज्ञ अश्व की स्तुति के रूप में भी किया है।

द्वितीय और तृतीय मन्त्र में गायत्री आदि वैदिक छन्दो तथा छन्दों में प्रयुक्त चरणों का उल्लेख है। '**यज्जाग्रतोदूरमुदैति**' से '**सुषारथिरश्वा**' पर्यन्त मन्त्रसमूह शिवसंकल्पसूक्त कहलाता हैं। मन्त्रों का देवता 'मन' हैं। इन मन्त्रों में मन की विशेषताएँ वर्णित हैं। इसे प्रत्येक मन्त्र के अन्त में '**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु**' पद आने से शिवसंकल्पसूक्त कहा गया है। साधक का मन शुभ विचारवाला हो, ऐसी स्तुति की गयी है।

द्वितीयाध्याय में '**सहस्रशीर्षा पुरुषः**' से 'यज्ञेन यज्ञमयज्ञन्त' पर्यन्त षोडशमन्त्र पुरुषसूक्त के रूप में हैं। इन मन्त्रों के नारायण ऋषि हैं एवं विराट् पुरुष देवता। विविध देव पूजन में आवाहन से मन्त्रपुष्पाञ्जलि पर्यन्त षोडशोपचारपूजन प्रायः इन्ही मन्त्रों से सम्पन्न होता है। विष्णु यज्ञ में पुरुषसूक्त की

आहुति प्रदान की जाती है।

द्वितीयाध्याय के सप्तदशमन्त्र '**अद्भ्यःसंभृतः**' से श्रीश्च ते लक्ष्मी च' अन्तिम मन्त्र उत्तरनारायण सूक्त के रूप में विश्रुत हैं। '**श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च**' यह मन्त्र श्रीलक्ष्मीदेवी के पूजन में प्रयुक्त होता है। द्वितीयाध्याय भगवान् विष्णु का माना जाता है।

तृतीयाध्याय अप्रतिरथसूक्त के रूप विख्यात है। तृतीय अध्याय के देवता देवराज इन्द्र है। इन मन्त्रों के ऋषि अप्रतिरथ होने के कारण इस अध्याय को अप्रतिरथ कहा गया है। इन मन्त्रों द्वारा इन्द्र की उपासना करने से शत्रुओं का नाश होता है। रूप में प्रथम मन्त्र का अर्थ देखते है-

आशुः शिशनो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्च्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेनां अजयत्साकमिन्द्रः।।१।।

अर्थात्-शीघ्रगामी, वज्र के समान तीक्ष्ण, वृषभ की भाँति वर्षणशील, शत्रुओं का घातक, मनुष्यों मे हलचल मचाने वाला, बार-बार गरजने वाला, देवता होने से पलकों से रहित अतएव जागरुक, उस अद्वितीय वीर इन्द्रदेव ने सैकडों शत्रुओं की सेनाओं को अकेले पराजित कर दिया।।

कतिपय विद्वान् '**आशु शिशानः**' से '**अमीषाञ्चितम्**' तक द्वादश मन्त्रों को स्वीकार करते हैं। कुछ विद्वान् 'अवसृष्टा' से 'मर्माणि' पर्यन्त पाँच मन्त्रों का भी समावेश करते हैं।

चतुर्थाध्याय में सप्तदश मन्त्र है। जो मैत्रसूक्त है। इस सूक्त में भगवान् सूर्य की स्तुति है। मैत्र सूक्त में सूर्य भगवान् का अति सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है।

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृत्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानिपश्यन्।।

अर्थात्-देवता आदि समस्त प्राणिवर्ग को अपने-अपने कार्य में प्रेरित करने वाले सबके प्रेरक, अत्यन्त प्रकाशयुक्त सूर्यदेव कृष्णवर्ण के अन्तरिक्ष लोक से लोटते हुए सुवर्णमय रथ में आरूढ होकर सभी लोकों का निरक्षण कर पूर्वदिशा में उदय हो रहे हैं।

रुद्राष्टाध्यायी के पाँचवे अध्याये में ६६ मन्त्र हैं। विद्वान् जन इसको शतरुद्रिय भी कहते है। इन मन्त्रों में भगवान् रुद्रके शत स्वरूप का वर्णन हैं। '**शतसंख्याता**

रुद्रदेवता अस्येति शतरुद्रियम् ' विद्वानों के अनुसार पंचम अध्याय के एकादश आर्वतन और शेष अध्याय के एक आर्वतन के साथ से एक 'रुद्र' या रुद्री होती है। इसे एकादशनी भी कहते है। एकादश आर्वतन से लघुरुद्र, लघुरुद्र की एकादश आवृत्ति एक महारुद्र, महारुद्र की एकादश आवृत्ति एक अतिरुद्र का अनुष्ठान होता है। इन सबका अभिषेकात्मक,पाठात्मक,एवं होमात्मक त्रिविध विधानमिलता है। भगवान् शंकर जी को जलधारा सर्वाधिक प्रिय है। 'अभिषेक प्रिय: शिव:' इसलिये रुद्राभिषेक की परम्परा है अभिषेक में रुद्रसूक्त की प्रमुखता है। रुद्रसूक्त में भगवान् रुद्र का दिव्यादिव्य वर्णन हुआ है प्रथम मन्त्र का वर्णन इस प्रकार है-

नमस्ते रुद्र मन्यवउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ।

अर्थात्-आपके क्रोध को नमस्कार है।आपके बाणों एवं दोनो भुजाओं को भी नमस्कार है हे रुद्र! दु:खविनाशय, ज्ञानप्रदायक, पापा आत्माओं को दण्ड देने वाले रुद्रदेव आपके क्रोधपूर्ण एवं बाणयुक्त हाथ शत्रुविनाशकारक हों, जिससे हमको शान्ति मिले- यही प्रार्थना है।

'रु रुत् दुखं द्रावयति रुद्रः। यद्वा रु गतौ ये गत्यार्थास्ते ज्ञानार्थाः। रवणं रुत् ज्ञानं राति ददति रुद्रः यद्वा पापिनो नाशन् दुःख भोगेन रोदयति रुद्र'

षष्ठऽध्याय को **'महच्छिराध्याय'** के रूप में जाना जाता है। सुप्रसिद्ध महामृत्युंजयमन्त्र इसी अध्याये में संनिविष्ट है।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारूकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

अर्थात्- दिव्यगन्ध से परिपूर्ण , धन-धान्य आदि सम्पतियों के दाता , तीन नेत्रों से भूषित त्रैलोक्य शंकर की हम उपासना करते हैं। इस पूजन से अकालमृत्यु द्वारा हम उस प्रकार मुक्त हो जायें जिस प्रकार पकी ककड़ी अपने वृन्त से अपने आप मुक्त हो जाती है। इसी प्रकार शिवजी की अनुकम्पा से मैं भी रोग से मुक्त हो जाऊँ (जन्म-मरण रूप सांसारिक बन्धन से मुक्त हो जाऊँ)। मन्त्र का उत्तरार्ध यजमान कन्या की प्रार्थना है। वे इस मंत्र से यज्ञाग्नि की तीन परिक्रमा करके उत्तम पति के प्रदाता त्र्यम्बक की पूजा करती है। जैसे ककड़ी का फल बन्धनमुक्त हो जाता है, उसी प्रकार वह कन्या माता-पिता के गोत्र से छूट जाती है। पति के गोत्र से मैं न छूटूँ यह उसकी प्रार्थना है। अर्थात् सर्वदा पतिग्रह में सुखपूर्वक निवास करूँ।

सप्तमाध्याय को 'जटा' कहा जाता है। इस अध्याय के ''**लोमभ्य स्वाहा**' मन्त्र को कई विद्वान् अभिषेक में ग्रहंण नही करते क्योंकि अन्त्येष्टि-संस्कार में चिताहोम में इस मन्त्रका प्रयोग होता है। परन्तु याज्ञिकसम्राट वेणीरामगौड ने स्वप्रकाशित पुस्तक में इस मन्त्र का विनियोग अभिषेक में करना चाहिये यह शास्त्र उक्त है।

अष्टमोऽध्याय: को 'चमकाध्याय' कहा जाता है। इस में कुल २९ मन्त्र है । प्रत्येक मन्त्र में 'च' कार एवं मे का बाहुल्य होने से कदाचित् चमकाध्याय अभिधान रखा गया है। ऋषि:स्वयं देव:, अग्निर्देवता:, रुद्राष्टाध्यायी के अवसान में 'ऋचं वाचं प्रपद्ये' इति चतुर्विंशति मन्त्र शान्त्याध्याय केरूप में एवं '**स्वस्ति न इन्द्र:**' इत्यादि द्वादश मन्त्र स्वस्ति-प्रार्थना के रूप प्रसिद्ध है। शान्त्यध्याय में विविध देवों से अनैकेश: शान्ति की प्रार्थना की गयी है।

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। व्वनस्प्पतय: शान्तिर्व्वि वे देवा: शातिर्ब्ब्रह्मशान्ति: सर्व्वं शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामाशान्तिरेधि।

भावार्थ-हमारे लिए द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथिवी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वदेव, परब्रह्म - ये सब शान्तिप्रद हों। चारों और शान्ति ही शान्ति हों, इस प्रकार की शान्ति हमारे प्रति सदा बढ़ती रहे।।

दृते दृं ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

हे महावीर देव ! यद्यपि हमारा शरीर जरा-जर्जरित हो गया है फिर भी इसको दृढ़ कीजिए । सभी प्राणी मुझको मित्र की दृष्टि से देखें, मैं सबका प्रिय हो जाऊँ । मैं भी सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ अर्थात् सब मेरे प्रिय हों । हम सब एक दूसरे को मित्र भाव से देखें, जिससे राग-द्वेष का विनाश हो।

तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येमशरद: शतं जीवेम शरद: शतं श्रृणुयाम शरद: शतं प्रब्ब्रवामशरद: शतमदीना: स्यामशरद: शतम्भूयश्च शरद: शतात् ।

वह देवताओं का हितकारी, संसार का चक्षु रूप, प्रकाशमान, सर्वथा शुद्ध

भगवान् सूर्य का पूर्वदिशा में उदय होता है। उस तेजोमय देव की कृपा से हम सौ वर्षो तक देखें, सौ वर्षो तक स्वाधीन (सत्स्वास्थ्ययुक्त) होकर जीवित रहें, सौ वर्षो तक सुन सकें, सौ वर्षो तक साफ-साफ बोल सकें और सौ वर्षो तक अदीन हों। इस प्रकार पुनः हम दीर्घकाल तक सर्वेन्द्रियसम्पन्न होकर फिर सौ वर्षो तक जीवित रहें। अर्थात् सभी इन्द्रियों के कार्यकक्ष होने पर ही जीवन का सुख है। इसी आशय से उक्त प्रार्थना की गयी है।

पृथ्वी सलिलं तेजो वायुराकाशमेव च।
सूर्याचन्द्रमसौ सोम-याजी चेत्यष्टमूर्त्तयः।।

।। शं भवतु कल्याणम्।।

विदुषां वंशवदा
सोनिया भट्टः
पूर्व व्याख्याता
जी.एन. कालेज, फगवाड़ा
एम.बी.ए. (एच.आर.) रेकी हिलर

पूजा के विविध उपचार

संक्षेप और विस्तार भेद से पूजा के अनेकों प्रकार के उपचार है- पाँच, दस, सोलह, अठारह, छत्तीस, चौंसठ तथा राजोपचार आदि। यहाँ इन्हें दिया जा रहा है-

पाँच उपचार- 1-गन्ध, 2-पुष्प, 3-धूप, 4-दीप और 5-नैवेद्य।

दस उपचार- 1-पाद्य, 2-अर्घ्य, 3-आचमन, 4-स्नान, 5-वस्त्र-निवेदन, 6-गन्ध, 7-पुष्प, 8-धूप, 9-दीप, 10-नैवेद्य।

सोलह उपचार- 1-पाद्य, 2-अर्घ्य, 3-आचमन, 4-स्नान, 5-वस्त्र, 6-आभूषण, 7-गन्ध, 8-पुष्प, 9-धूप, 10-दीप, 11-नैवेद्य, 12-आचमन, 13-ताम्बूल, 14-स्तवपाठ, 15-तर्पण और16-नमस्कार।

अठारह उपचार- 1-आसन, 2-स्वागत, 3-पाद्य, 4-अर्घ्य, 5-आचमनीय, 6-स्नानीय, 7- वस्त्र, 8-यज्ञोपवीत, 9-भूषण, 10-गन्ध, 11-पुष्प, 12-धूप, 13-दीप, 14-नैवेद्य 15-दर्पण, 16-माल्य, 17-अनुलेपन और 18-नमस्कार।

छत्तीस उपचार- 1-आसन, 2-अभ्यञ्जन, 3-उद्वर्तन, 4-निरुक्षण, 5-सम्मार्जन, 6-सर्पि:स्नपन, 7-आवाहन, 8-पाद्य, 9-अर्घ्य, 10-आचमन, 11-स्नान, 12-मधुपर्क, 13-पुनराचन, 14-यज्ञोपवीत-वस्त्र, 15-अलंकार, 16-गन्ध, 17-पुष्प, 18-धूप, 19-दीप, 20-नैवेद्य, 21-ताम्बूल, 22-पुष्पमाला, 23-अनुलेपन, 24-शय्या, 25-चामर, 26-व्यजन, 27-आदर्श,

28-नमस्कार, 29-गायन, 30-वादन, 31-नर्तन, 32-स्तुतिगान, 33-हवन, 34-प्रदक्षिणा, 35-दन्तकाष्ठ और 36-विर्सजन।

चौंसठ उपचार-(शिवशक्तिपूजामें)

1-पाद्य, 2-अर्घ्य, 3-आसन, 4-तैलाभ्यङ्ग, 5-मज्जनशालाप्रवेश, 6-पीठोपवेशन 7-दिव्यस्नानीय, 8-उद्वर्तन, 9-उष्णोदक-स्नान, 10-तीर्थाभिषेक, 11-धौतवस्त्रपरिमार्जन, 12-अरुणदुकूलधारण, 13-अरुणोत्तरीयधारण, 14-आलेपमण्डप प्रवेश, 15-पीठोपवेशन, 16-चन्दनादि दिव्यगन्धानुलेपन, 17-नानाविधपुष्पार्पण, 18-भूषणमण्डपप्रवेश, 19-भूषणमणिपीठोपवेशन, 20-नवरत्नमुकुटधारण, 21-चन्द्रशकल, 22-सीमन्तसिन्दूर, 23-तिलकरत्न, 24-कालाञ्जन, 25-कर्णपाली, 26नासाभरण, 27-अधरयावक, 28-ग्रथुनभूषण, 29-कनकचित्रपदक, 30-महापदक, 31-मुक्तावली, 32- एकावली, 33-देवच्छन्दक, 34-केयूरचतुष्टय, 35-वलयावली, 36-ऊर्मिकावली, 37-काञ्चीदाम-कटिसूत्र, 38-शोभाख्याभरण, 39-पादकटक, 40रत्ननूपुर, 41-पादाङ्गलीयक, चार हाथों में क्रमशः 42-अंकुश, 43-पाश, 44-पुण्ड्रेक्षुचाप और 45-पुष्पबाण का धारण, 46-माणिक्यपादुका, 47-सिंहासन-रोहण 48-पर्यङ्कोपवेशन, 49-अमृतासवसेवन 50-आचमनीय, 51-कर्पूरवटिका, 52-आनन्दोल्लासविलासहास, 53-मंगलार्तिक, 54-श्वेतच्छत्र, 55-चामरद्वय, 56-दर्पण, 57-तालवृन्त, 58-गन्ध, 59-पुष्प, 60-धूप, 61-दीप, 62-नैवेद्य, 63-आचमन, 64-पुनराचमन (ताम्बूल और वन्दना)।

राजोपचार- षोडशोपचार के सिवा छत्र, चामर, पादुका और दर्पण।

श्रीगणेशाय नमः

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

इति मन्त्रेण कुशनिर्मित पवित्रीधारणम्।[1]

।। आचमनम्।।

यजमानः प्राङ्मुख उपविश्य, स्वदक्षिणतः पत्नीं चोपवेश्य।[2]

(तीन बार आचमन करें)

ॐ नारायणाय नमः

ॐ माधवाय नमः

ॐ केशवाय नमः

त्रिराचमनीयम्॥ हस्तप्रक्षालनम्॥ (फिर हाथ धोयें) हृषीकेशाय नमः॥

(निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने ऊपर जल छिड़के)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

पुण्डरीकाक्षः पुनातु - पुण्डरी काक्षः पुनातु

।। शिखा बन्धनम्।।[3]

चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समुद्भवे।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

।। दिग्रक्षणम्।।

(बायें हाथ में अक्षत रखकर दाहिने हाथ से ढ़ककर निम्न मंत्रों को उच्चारण करें)

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तुः शिवाज्ञया।।

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशः।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

1. यथावज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्।।
2. सर्वेषु धर्मकायेषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपादप्रक्षालने तु वामतः।।
3. स्नाने दाने जपे होम सन्ध्यायां देवतार्चने।शिखा ग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद वै कदाचन।।

(फिर निम्न लिखित के अनुसार चारों दिशाओं में पूर्वादिक्रम से अक्षत छोड़ें)

ॐ प्राच्यै नमः (पूर्व दिशा की ओर)
ॐ अवाच्यै नमः (दक्षिण दिशा की ओर)
ॐ प्रतीच्यै नमः (पश्चिम दिशा की ओर)
ॐ उदीच्यै नमः (उत्तर दिशा की ओर)
ॐ ऊर्द्ध्वायै नमः (ऊपर की ओर)
ॐ पूजा भूम्यै नमौ नमः (शेष अक्षत पूजा स्थान में)

।। पृथ्वीपूजनम् ।।

विनियोगः- **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्रकरणे विनियोगः ।।**

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वम् विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।

ॐ पृथिव्यै नमः।।
ॐ आधार शक्त्यै नमः।।
ॐ पूजा भूम्यै नमो नमः।।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि

ॐ स्योना पृथिविनो भावनृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः।।

ॐ पृथिव्यै नमः मन्त्र पुष्पांजलि समर्पयामि।।

।। दीपपूजनम् ।।

भो! दीपदेवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्तावत्वं सुस्थिरो भव।।
ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः
तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।

1. घृतदीपो दक्षिणतस्तैल दीपस्तु वामतः (महोदधि)

क्रतु समय सपर्या विच्छेद हेतुः
जयतु बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।
तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।
दीपकनाथ भैरवाय नमः।।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

(फिर नीचे लिखे वेदमन्त्र को पढ़कर दीपक के लिए पुष्पाजंलि दे)
ॐ येभूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः। तेषां सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।
मन्त्र पुष्पांजलि समर्पयामि।।

।। यजमानतिलककरणम् ।।

भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मी प्रसीदतु।
रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा।।
युञ्जन्ति ब्रद्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचनादिवि

ॐ दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै चत्वा चानाम्यहम्। अथोत्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शाव्विरोहतात्।।

।। यजमानहस्ते रक्षासूत्र बन्धनम् ।।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबन्ध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥
ॐ यदा बध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳशतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्मऽआ बध्नामि शत शारदा यायुष्मांजरदष्ट्टिर्यथासम्।।

।। यजमान पत्नी/सौभाग्यवती ।।
(तिलककरणम्)

ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्ब्भ्रातृभि रुतवा हिरण्यैः।
नाकङ्गृब्भ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः।।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व लोकम्मऽइषाण।।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

।। आशीर्वादमन्त्राः सर्वेषां जनानां कृते ।।

ॐ दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै चत्वा खनाम्यहम्।
अथोत्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा व्विरोहतात्।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

।। स्वस्तिवाचनम् ।।

हस्ते गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आनोभद्रादीन् मन्त्रान् पठेत्।

हरिः ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।।
देवानांभद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभिनो निवर्त्तताम्।
देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२।।
तान्पूर्व्वयानि विदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं व्वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।।
तन्नो व्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयो भुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेव्वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।।
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति न स्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्द्दधातु।।६।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।

अग्निजिऽह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वो नो देवा अवसागमन्निह।।७।।
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।८।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनु नाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषता युर्गन्तोः।।९।।
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
व्विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।१०।।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।११।।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।।१२।।

ॐ शान्तिः शान्तिः

।। सुशान्तिर्भवतु ।। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।।

।। श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।।

ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।।

ॐ मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः।।

ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः।।

ॐ कुल देवताभ्यो नमः।।

ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः।।

ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः।।

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।।

ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः।।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।।

ॐ श्री गुरुभ्योनमः।।

ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणधिपतये नमः।।

।। अविघ्नमस्तु ।।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।१।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।२।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।३।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।४।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।५।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।।६।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।७।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेङ्घ्रियुगं स्मरामि ।।८।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।९।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।१०।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।११।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।१२।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः ।।१३।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।१४।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरुं मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।१५।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ।।१६।।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणधिपतये नमः।

।। कर्मपात्रपूजनम् ।।

ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पितृतान्नो भरीमभिः।।

(भूमि स्पर्श)

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानायत्वा व्यानायत्वा।
दीर्घामनुप्प्रसिति मायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः।।
प्प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनपयोऽसि। (धान्य प्रक्षेप)

ॐ आजिग्घ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा
निवर्त्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशता द्रयिः।।

(पात्र स्थापन)

ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

(पात्र में चन्दन)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषतस्व
भानवो विप्रा न विष्ठयामती जो जान्विन्द्रते हरी।।

(पात्र में अक्षत)

ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ।।

(पात्र में पुष्प)

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

(दूर्वा)

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौसवितुर्वः प्प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्र पते पवित्रपूतस्य
यत्कामः पुने तच्छकेयमम्॥

(पात्र में पवित्री)

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

(सूत्रवेष्टनम्)

ॐ यद्देवा देवहेडनंदेवा सश्चकृमा व्वयम्।
अग्निर्म्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमाव्वयम्।
व्वायुर्म्मा तस्मादेनसो विश्व्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।।

ॐ यदि जाग्रद्यदिस्वजऽएनाᳪसि चकृमाव्वयम्।
सूर्यो मातस्मादेनसो विश्व्वान्मुञ्चत्वᳪहसः।।

(पात्र में जल आलोढ़न)

अथवा

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

।। कर्मपात्रं सुसम्पन्नम् ।।

(ऐसा उच्चारण करते हुए कर्म पात्र को दोनों हाथों से आच्छादन करें।)

(फिर निम्नलिखित मंत्रों से पुष्प या दूर्वा से पूजा वस्तुओं पर, पूजा स्थान में एवं यजमान के ऊपर जल का छींटा दें)

ॐ पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।।
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।
पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु ,पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

सूर्याय अर्ध्यम्

(भगवान् सूर्य को अर्ध्य प्रदान करें।)

ॐ आकृष्णेनरजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।
एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्ध्यं दिवाकर ।।

(फिर निम्नलिखित मन्त्र से लालपुष्प हाथ में लेकर भगवान सूर्य को पुष्पांजलि दें)

ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती।
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्उलवान्किरीटी
हारी हिरणमयवपुर्धृत शंखचक्र।।

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने।
जन्मान्तर सहस्रेषु दरिद्रयं नोपजयते।।

।। कर्म साक्षिणे भास्कराय नमः।। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

।। ततः संकल्पः ।।

यजमानः जलगन्धाक्षतफलपुष्पद्रव्ययं चादाय संकल्पं कुर्यात्।।

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वतमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूदीपे भरतखाण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते भागीरथ्याः पश्चिमदिग्भागेअमुकक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ठ्यब्दानां मध्ये अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामांगल्य- प्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) सपत्नीकोहं ममाऽऽत्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापक्षयपूर्वकं आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविधतापनिवृत्त्यर्थम्, आयुरारोग्यैश्वर्यादिवृद्ध्यर्थम्, श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं चधर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धि द्वारा चतुर्वगफलप्राप्त्यर्थं रुद्रीपाठसहितं शिवपूजनं नन्दीश्वरं-वीरभद्रं-स्वामिकार्तिकं-कुबेरं-कीर्तिमुखं च पूजनं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये।।

1. संकल्पेन विना विप्रयत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चास्याल्पं तस्य धर्मस्यार्धक्षयो भवेत् ।।
(दक्ष)

।। गणेशम्बिकयोः पूजनम् ।।

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, गणपतिमावाहयेत् षोडशोपचारै[1] : पूजयेत् च। तद्यथा-

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामेहप्रियाणान्त्वाप्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिँ हवामहे व्वसोमम। आहम जानिगर्ब्भधमात्वम जासि गर्ब्भधम्।।

एह्येहि ऐरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। व्विश्वे देवासऽइहमादयन्तामोंऽ३ँप्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवःस्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। ध्यानम्। पुष्पामासनं समर्पयामि।
ॐ पादयोः पाद्यम्। हस्तयोर्अर्घ्यम्। मुखे आचमनीयम् सर्वाङ्गेषु स्नानीयं जलं समर्पयामि।

---

1. आवाहनासने पाद्यमर्ध्यमाचनीयकम्। स्नानं वस्त्रोपवीतं च गंध-माल्यान्यनुक्रमात्।।
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा। पुष्पाञ्जलिरिप्रोक्ता उपचारस्तु षोडश।।
फलेन सफला वाप्तिः सांगतादक्षिणार्पणात्।। आह्निके (कर्मप्रद)

पञ्चामृतम्[2] **- ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।**
सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्- ॐ युवासुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवयउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः।।

ॐ भूर्भूवस्व: गणेशाम्बिकाम्यां नमं वस्त्रं समर्पयामि।।

उपवस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरूथमासदत्त्स्वः।
व्वासो अग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व व्विभावसो।।
शीत वातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भूवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः उपवस्त्रम् समर्पयामि।। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भूवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

गन्धानुलेपनम्- ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिद्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्यक्ष्माद मुच्च्यत।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भूवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः गन्धं समर्पयामि।।

---

2. (पयोदधिधृतमधुशर्करा: पञ्चामृतानि)

अक्षतान्- ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रानविष्ठ्ठयामती योजान्विन्द्र तेहरी।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।।

पुष्पाणि- ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदध्वंपुष्पवतीःप्प्रसूवरीः। अश्वाऽइवस जित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।। पुष्पाणि समर्पयामि।।

पुष्पमाला - ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पुष्पमालिकां समर्पयामि।।

दूर्वा- ॐ काडात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि।। एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेणशतेन च।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्- ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्याय च।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि।।[1]

नानापरिमलद्रव्याणि- ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न् पुमान् पुमा ँ सं परिपातु व्विश्वतः ।।

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।।

सिन्दूरम्- ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषो नव्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्न्वमानः।

1. पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्। यथोत्पन्नं तथा देय विल्व पत्रमधोमुखम्।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
।। सिन्दूरं समर्पयामि।।

सुगन्धिद्रव्यम्- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृताम्।। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।।

धूप- ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितमꣳसस्नितमं पप्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीप- ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्ज्योतिज्जर्योतिः सूर्य्यः स्वाहाः। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहाः।।१।।
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत। क्षोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।२।।
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि।

- हस्तप्रक्षालनपूर्वकं नैवेद्यम्।

नैवेद्यम्- ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहिद्विपदे चतुष्पदे।।१।।

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२।।ऽअकल्पयन्।।२।।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम्।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयम् ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा।

मध्ये मध्ये पानीयम्। उत्तराचमनीयम्। हस्तप्रक्षालनम्। मुख प्रक्षालनम् समर्पयामि। करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनम्।।

चन्दनम्- ॐ अ॑शुनाते अ॑शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽ अच्च्युतः।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वरं।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनेन करोद् वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलम्- ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुञ्चंत्व॑हसः।।१।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।२।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूल्- ॐ उतस्मास्यद्द्रवतस्तुरण्यतः पर्ण्णन्नवेरनुवातिप्प्रगर्द्धिनः। श्येनस्ये वद्ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्क्राव्णणः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।।१।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।२।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थे एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।।

दक्षिणा- ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्त्तः याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्व्वैश्व कर्म्मणः स्वर्द्देवेषुनो दधत्।।१।।
ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।२।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाम्यां नमः कृतायाः पूजायाः सादगुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।।

विशेषार्ध्यः-

(श्री गणेश जी के लिए)

ताम्र पात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्ध्यपात्र पात्र में लेकर निम्न श्लोक पढ़े

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाणमातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनने सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।
भूर्भवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः

-विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

।। ततः मन्त्रपुष्पाञ्जलिः ।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियम्।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि-मुक्ति हेतुः।

गणेशपूजने कर्मयन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।

कदलीगर्भसम्भूतं कपूरं तु प्रदीपितम्।
अरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे परदो भव।।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्व्वायुषां तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।

।। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

अनया पूजया श्री गणेशाम्बिके साङ्गे सपरिवारे प्रीयेतां न मम।

(ऐसा कहकर एक आचमनी जल श्री गणेश - अम्बिका के सामने देवें।)

।। शिवपरिवारपूजनम् ।।

(१) गणेशपूजनम् (२) नन्दीश्वरपूजनम्
(३) वीरभद्रपूजनम् (४) कार्तिकेयपूजनम् (स्कन्दपूजनम्)
(५) कुबेरपूजनम् (६) कीर्तिमुखपूजनम्
(७) पार्वतीपूजनम्

।। नन्दीश्वरपूजनम् ।।

आवाहन मन्त्र :-

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनन्दीश्वराय नमः।। ध्यानं पुष्पासनं समर्पयामि।

(पुष्पं दत्वा पादयोः पाद्यमित्यारभ्य दक्षिणापर्यन्तं पूजनं विधेयम्)

(ततः पुष्पाञ्जलिः)

।। ॐ प्रैतुव्वाजी क्रनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा। भरन्नग्निंपुरीष्यंमा पाद्ध्यायुषः पुरा। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

।। अनया पूजया श्री नन्दीश्वरः साङ्गः सपरिवारः प्रीयतां न मम।।

।। वीरभद्रपूजनम् ।।

आवाहन मन्त्र :- ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवीरभद्राय नमः।। ध्यानं पुष्पासनं समर्पयामि।

(इति पुष्पं दत्वा षोडशोपचारविधिना पूजनम्)

(ततः पुष्पाञ्जलिः)

।। ॐ भद्द्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अद्ध्वरः। भद्राऽउत प्रशस्तयः।।

मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

।।अनया पूजया श्री वीरभद्रः सांगः सपरिवारः प्रीयतां न मम।।

।। कार्तिकेयपूजनम् (स्कन्दपूजनम्) ।।

आवाहन मन्त्र :-

ॐ यदक्रन्दः प्प्रथमं जायमानऽउद्द्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्व्वन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीस्कन्दाय नमः।। ध्यानं पुष्पासनं समर्पयामि।। ततः षोडशोपचारविधिना पूजनम् ततः पुष्पाञ्जलिः।।

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा व्विशिखा इव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु।। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

।। अनया पूजया श्री स्कन्दः साङ्गः सपरिवारः प्रीयतां न मम।।

।। कुबेरपूजनम् ।।

ॐकुविदंगयवमन्तोयवञ्चिद्यथादान्त्यनुपूर्व्वंव्वियूय इहेहै षांकृणुहिभोजना-नियेबर्हिषोनमऽउक्तिंय्यजन्ति॥

इतिमंत्रेण षोडशोपचारैः कुबेरं पूजयेत्॥

(ततः पुष्पाञ्जलिः)

ॐ व्वयॐसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः। प्रजावन्तःसचेमहि॥

इतिकुबेर पूजनम्॥ अनया पूजया श्री कुबेर सांगः सपरिवारः प्रीयतां नमम्

।। कीर्तिमुखपूजनम् ।।

आवाहन मन्त्र :-

ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा गणश्रियेस्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहासँ सर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्ज्योतिषे स्वाहा मलिम्म्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीकीर्तिमुखाय नमः। ध्यानं पुष्पासनं समर्पयामि।। ततः ।। मन्त्र पुष्पाञ्जलिः।

ॐ ओजश्च मे सहश्च मऽआत्मा चमे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म्म च मेङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूँषि च मेशरीराणि चमऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

।। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।। अनया पूजया श्री कीर्तिमुखः सांगः सपरिवारः प्रीयतां न मम।।

।। पार्वतीपूजनम् ।।

आवाहन मन्त्र :-ॐ प्रपर्व्वतस्यव्वृषभस्य पृष्ठान्ना वश्चरिन्त स्वसिचऽ इयाना:। ताऽआववृत्नधरागुदत्ताऽअहिम्बुध्न्य मनुरीय माणा:।। व्विष्णोर्व्विक्क्रमणमसि व्विष्णोव्विक्क्रान्तमसि व्विष्णो:क्क्रान्तमसि।। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्ण्णनिषाणा मुम्मइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीपार्वत्यै नम:। ध्यानं पुष्पासनं समर्पयामि।। तत: षोडशोपचारै: पूजनं विधेयम्।। तत: मन्त्र पुष्पाञ्जलि:।।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
स सस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।
।। अनया पूजया श्री पार्वती सांग: सपरिवार प्रीयतां न मम।।

।। शिवपूजनम् ।।

'ॐ केशवाय नम:' आदि आचमन के मन्त्रों से लेकर तिलक धारणमन्त्र तक पूर्ववत् मन्त्रों का उच्चारण करते हुए स्वस्तिवाचन, गणेश स्मरण, कर्मपात्र पूजन व शिवार्चन हेतु संकल्प करें। शिवार्चन या रुद्राभिषेक कर्म में पहले शिवपरिवार देवताओं का पूजन किया जाता है। तत: भगवान् शंकर जी (किसी भी प्रतिष्ठित शिवलिंग) का अथवा नर्मदेश्वर शिवलिंग का विधिवत् न्यासपूर्वक पूजन किया जाता है। शिव पूजन में सर्वप्रथम "ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव" मन्त्र से लेकर "मानस्ताके" इस मन्त्र का 16 मन्त्रों से शिवलिङ्ग पर जलधारा छोड़ें, तत: पूजन प्रारम्भ करें।

(शिवजी के पूजन से पूर्व बिल्व पत्र या दूर्वा से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अंगन्यास करें। न्यास करते समय बिल्वपत्र या दूर्वा हाथ में रखकर शिवलिंग का स्पर्श करते हुए अपने अंगों का भी स्पर्श करें।

(अथ अंगन्यास)

(१) ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तयानस्तन्नवाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। ।। शिखायाम्।।

(२) ॐ अस्मिन् महत्यर्णवेन्तरिक्षे भवाऽअधि। तेषा ँसहस्रयोजने ऽवधन्नवानि तन्मसि।। ।।शिरसि।।

(३) ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्म्याम्। तेषा ँसहस्रयोजनेऽ व धन्नवानि तन्नमसि।। ।। ललाटे।।

(४) ॐ वयः सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ।। भ्रुवोर्मध्ये।।

(५) ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय माऽमृतात्।। ।। नेत्रयोः।।

(६) ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहाः सूर्यो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। ।। तृतीयनेत्रे।।

(७) ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्यायच नमः काटयाय च नीप्याय च नमः। कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च।। ।। कर्णयोः।।

(८) ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमा नो गोषु मा नोऽ-अश्वेषुरीरिषः। मानो व्वीरान्नुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।। ।।नासिकयोः।।

(९) ॐ अवतत्य धनुष्टवँ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्यानां मुखाशिवो न सुमनाभव ।।मुखे।।

(१०) ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्त्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिब्भ्यो जिघाँ्सद्भ्योमुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः।।

।। ग्रीवायाम्।।

(११) ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवँ्रुद्राऽउपश्रिताः। तेषाँ्सहस्रयो-जनेऽवधन्वानि तन्मसि।।

।। कण्ठदेशे।।

(१२) ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे। उभाब्भ्यामुतते नमोबाहुब्भ्यां तव धन्वने।।

।। बाह्वोः।।

(१३) ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाँ्सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

।। हस्तयोः।।

(१४) ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च।।

।। अंगुलिषु।।

(१५) ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्चवो नमो नमो व किरिकेब्भ्यो देवानाँ्हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेब्भ्यः

।। हृदये।।

(१६) ॐ नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्चवो नमो नमः ।। पृष्ठे।।

(१७) ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳहेतयो न्यमस्म्मन्नि वपन्तु ताः।।

।। उदरे ।।

(१८) ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

।। दक्षिण कुक्षौ।।

(१९) ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहित॥ आसाम्प्रजानाम्मेषां पशूनां मा भेर्म्मारोङ्मो चनः किञ्च नाममत्।।

।। वामकुक्षौ।।

(२० ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

।। नाभौ।।

(२१) ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवोनःसुमना भव। परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिंव्वसानऽआचर पिनाकम्बिभ्रदा गहि।। ।। कट्याम्।।

(२२) ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तु मा मा हिँसीः। निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्प्रजननायरायस्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।

।। उपस्थे।। (हस्तप्रक्षालनम्)

(हाथ धोकर दूसरा बिल्वपत्र या दूर्वा लें।)

(२३) ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे व्विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।।

।। गुह्ये।। (हस्तप्रक्षालनम्)

(हाथ धोकर दूसरा बिल्वपत्र या दूर्वा लें।)

(२४) ॐ इषेत्वोर्ज्जे त्वा व्वायवस्त्थ देवो वः सविता प्प्रार्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायदध्वमग्घ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशत माघशꣳ सोद्ध्रुवाऽ-अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।।

(हाथ धोकर दूसरा बिल्वपत्र या दूर्वा लें।) ।।वृषणयोः।।(हस्तप्रक्षालनम्)

(२५) ॐ मा नो महान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽक्षन्तमुत मानऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मानःप्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः।। ।।ऊर्वो।।

(२६) ॐ एषते रुद्रभागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्व स्वाहैषते रुद्रभागऽआखुस्ते पशुः।। ।। जान्वोः।।

(२७) ॐ नमो ज्येष्ठ्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजायचापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।।

।। जंघयोः।।

(२८) ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च नमो बृहते च व्वर्षीयसे च नमो व्वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्रया च प्रथमाय च।। ।। गुल्फयोः।।

(२९) ॐ ये पथां पथिरक्षयऽऐलवृदाऽआयुर्युधः। तेषाँ सहस्रयोजनेऽ-वधन्न्वानि तन्मसि।। ।। पादयोः।। (हस्तक्षालनम्)

(हाथ धोकर दूसरा बिल्वपत्र या दूर्वा लें।)

(३०) ॐ अद्ध्यवोच दधिवक्ताप्प्रथमो दैव्यौ भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भ्यन्त्सर्व्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव।।

।। कवचे।।

(३१) ॐ नमो बिल्म्मिने चकवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्रुताय श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च।।

।। अस्त्रे।।

(३२) ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ २।। उत॥ अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।

।। धनुषि।।

(३३) ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमाराव्विशिखाऽइव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु व्विश्वाहा शर्म्म यच्छतु।।

।। बाणे ।।

(३४) ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्र ँ् हेतयोऽन्न्यमस्मन्नि वपन्तु ताः॥

।। खड्गे।।

(३५) ॐ यऽएतावन्तश्च्च भूया ँ्सश्च्च दिशो रुद्राव्वितस्थिरे। तेषा ँ् सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्मसि।।

।। दिग्बन्धनम्।।

(एवं न्यास विधिं विधाय ''शिवोऽहम्'' इति भावयेत् ततः ध्यानादिकं कृत्वा षोडशोपचारैः रुद्रार्चनं कुर्यात्।)

।। ध्यानम् ।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसम्,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवरा भीतिहस्तंप्रसन्नम्।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्,
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ध्यानम्- भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्- ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्। मानोव्वधीःपितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः।।

आसनम्- ॐ या ते रुद्रशिवा तनूरघोरा पापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।
भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्पासनं समर्पयामि।।

पाद्यम्- ॐ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मामा हिँ्सीः पुरुषं जगत्।।
भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः।। पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्यम्- ॐ शिवेनव्वचसात्वागिरिशाच्छावदामसि। यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मँ्सुमना असत्।।
भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः।। अर्घ्यं समर्पयामि।

मुखे आचमनीयम्- ॐ अद्ध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्। अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव।।
।। भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।।

सर्वाङ्गेषु स्नानीयं जलम्ः- ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुणऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳरुद्राऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे।
भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। सर्वाङ्गेषु स्नानीयजलं सपर्मयामि।।

पयस्नानम्- ॐ आप्यायस्व समेतुते व्विश्वतः सोमव्वृष्ण्यम्। भवाव्वाजस्य सङ्गथे।।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतु च प्यः स्नानार्थमर्पितम्।।

पयस्नानं समर्पयामि। पयस्नानान्ते। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।।

शुद्धोदक स्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्प्रसवेश्शिवनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो-हस्ताभ्याम्।।

दधिस्नानम्- ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽआयूँषि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दधिस्नानं समर्पयामि। दधि स्नानन्ते। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुःप्प्रसवेश्शिवनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो-हस्ताभ्याम्।।

घृतस्नानम्- ॐ घृतं मिमिक्षेघृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं व्वृषभव्वक्षि हव्यम्।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

घृत स्नानं समर्पयामि।। घृतस्नानान्ते शुद्धोदक-स्नानम् समर्पयामि।।

शुद्धोदकस्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुःप्प्रसवेश्शिवनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो-हस्ताभ्याम्।।

मधुस्नानम्- ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ् रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमानोवनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽअस्तुसूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

पुष्परेणुसमद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

मधुस्नानं सपर्मयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानम् समर्पयामि।।

शुद्धोदकस्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुःप्प्रसवेशिश्वनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो-हस्ताभ्याम्।।

शर्करास्नानम्- ॐ अपाँ् रसमुद्वयसꣳसूर्य्ये सन्तꣳसमाहितम्। अपाँ् रसस्य यो रसस्तं व्वो गुह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुरससमुद्भुतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते। शुद्धोदक स्नान समर्पयामि।।

शुद्धोदक स्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्प्रसवेशिश्वनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो-हस्ताभ्याम्।।

पञ्चामृतस्नानम्- ॐ पञ्च नद्यः सरस्वती मपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानान्ते। शुद्धोदकस्नानम् समर्पयामि।

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शुद्धोदक स्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णणो-हस्ताभ्याम्।।

गन्धोदकस्नानम- ॐ गन्धर्व्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातु व्विश्वस्या रिष्टयै जयमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।
इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो व्विश्वस्यारिष्टयै जयमानस्य परिधिरस्याग्नि-रिडऽईडितः।।

मित्रावरुणौत्त्वोत्तरतःपरिधत्तान्ध्रुवेणधर्म्मणा व्विश्वस्या रिष्टयै जयमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।।

प्रोञ्छनम्- ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्कर्योर्ज्ज्याम्। याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवो वप।। प्रोञ्छनं समर्पयामि।।

वस्त्रम्- ॐ युवासुवासा परिवीत आगात्सउश्रेयान भवति जायमानः। तं धीरासः कवयउन्नयन्तिस्वाध्योमनसा देवयन्तः।।
परिधास्यै यशोधास्यै दीर्ग्धायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतञ्च जीवामि शरदः पुरूचीरायस्प्पोषमभिसंव्यायिष्ये (पा.गृ.)

वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथ मासदत्स्वः वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंवयवस्व विभावसो।।

शीत वातोष्ण सन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवींत बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीते नोपनह्यायामि।।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं स०।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

भस्मधारणम्- प्रसद्यभस्मनायोनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सᳬसृज्ज्यमातृभिष्टवाञ्जोतिष्म्मान्नपुनरासदः।

गन्धम- ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वमोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।। गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षतान्- ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्प्रियाऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवोव्विप्प्रानविष्ठ्ठयामतीयोजान्निवन्द्र तेहरी।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि- ॐ ओषधीःप्प्रतिमोदध्वंपुष्पवतीःप्प्रसूवरीः। अश्वाऽइवस जित्त्वरीव्वीरुधः पारयिष्णवः।। पुष्पाणि समर्पयामि।।

पुष्पमाला- ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पुष्पमालिकां समर्पयामि।।

दूर्वा- ॐ काडात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि।। एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेणशतेन च।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्- ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्याय च।।

अमृतोद्भवं श्री वृक्षं शंकरस्य सदाप्रियम्।
तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वरः।।१।।
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलै शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि अर्पये परमेश्वरः।।२।।
गृहाण बिल्वपत्राणि सुपुष्पाणि महेश्वरः।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय।।३।।
त्रिदंल त्रिगुणाकारं त्रिनेत्र च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्म पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४।।
काशी वास निवासी च काल भैरव पूजनम्।
प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।५।।
अखण्डैर्बिल्व पत्रैश्च पूजयेच्छिव शंकरम्।
कोटि कन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।६।।
ॐ नमो भगवते रुद्राय।। बिल्वपत्राणि समर्पयामि।।

नानापरिमलद्रव्याणि- ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्न् पुमान् पुमा ँ् सं परिपातु व्विश्वतः ।।

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।।

सिन्दूरम्- ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषो नव्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्न्वमानः।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

।। सिन्दूरं समर्पयामि।।

सुगन्धिद्रव्यम्- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृताम्।। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।।

धूप- ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितमॅसस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

–धूपमाघ्रापयामि।

दीप- ॐ अग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहाः। अग्निर्व्वच्चर्वो ज्ज्योतिव्वर्च्चः स्वाहा। सूज्यों व्वच्चर्वो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्य्जः सूर्य्जो ज्ज्योतिः स्वाहाः।।१।।

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्जोऽअजायत। क्षोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।२।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि।

– हस्तप्रक्षालनपूर्वकं नैवेद्यम्।

नैवेद्यम्- ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहिद्विपदे चतुष्पदे।।१।।

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षँ् शीष्ण्र्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२।।ऽअकल्पयन्।।२।।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परागंतिम्।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारो भक्ष्यभोज्यंच नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयम्

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा।

मध्ये मध्ये पानीयम्। उत्तराचमनीयम्। हस्तप्रक्षालनम्। मुख प्रक्षालनम्। करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनम्।।

चन्दनम्- ॐ अᳬशुनाते अᳬशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽ अच्च्युतः।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वरं।।

ऋतुफलम्- ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुञ्चंत्वᳬहसः।।१।।

इदं फलं मया देव स्थापित पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।२।।

–ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूल्- ॐ उतस्मास्यद्द्रवतस्तुरण्यतः पर्ण्णन्नवेरनुवातिप्प्रगर्द्धिनः। श्येनस्ये वद्ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्क्राव्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।।१।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।२।।

मुखशुद्ध्यर्थे एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।।

दक्षिणाम्- ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्त्त याश्च दक्षिणाः। तदग्निर्व्वैश्व कर्म्मणः स्वर्द्देवेषुनो दधत्।।१।।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।२।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
-कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।।

।। ध्यानम् ।।

शुद्धस्फटिक संकाशं त्रिनेत्रं पंचवक्त्रकम्।
गंङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्।।१।।
नीलग्रीवं शशांकांकं नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्।।२।।
कमण्डल्वक्ष सूत्राभ्यामन्वितं शूल पाणिनम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटा शिखामुद्योतकारिणम्।।३।।
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्द्ध धारिणम्।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोग समन्वितम्।।४।।
दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्।।५।।
सर्वव्यापिनमीशानमेवं वै विश्वरूपिणम्।
गौरीं चतुर्भुजां चण्डीं त्रिनेत्रां मुकुटोज्ज्वलाम्।।६।।
पद्मदर्पणहस्तां च वरदाभयहस्तकाम्।
दिव्यवस्त्रपरीधानां दिव्यालंकार भूषिताम्।।७।।
प्रसन्नवदनां ध्यायेच्छिवोत्संगे तु वामतः।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्।।८।।

।। ततः पुष्पोदकेन तर्पयेत् ।।

ॐ भवं देवं तर्पयामि ।।१।।

ॐ शर्वं देवं तर्पयामि ।।२।।

ॐ ईशानं देवं तर्पयामि ।।३।।

ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि ।।४।।

ॐ रुद्रंदेवं तर्पयामि ।।५।।

ॐ उग्रं देवं तर्पयामि ।।६।।

ॐ भीमं देवं तर्पयामि ।।७।।

ॐ महान्तं देवं तर्पयामि ।।८।।

ॐ देवदेवं तर्पयामि ।।९।।

ॐ ज्येष्ठाय नमः । पुनराचमनीयम् । ॐ श्रेष्ठाय नमः । मधुपर्कम् ।।

मधुपर्क गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कपः ।
मधुपर्क प्रदानेन प्रीतो भव महेश्वरः ।।

ॐ कालाय नमः गन्धं समर्पयामि ।

ॐ कलविकरणाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि

ॐ सर्वभूतदमनाय नमः धूपमाघ्रापयामि ।

ॐ मनोन्मनाय नमः दीपं दर्शयामि ।

ॐ भवोद् भवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि ।।

।। अथाष्टौ पुष्पाञ्जलयः।।

ॐ भवाय देवाय नमः ।।१।।

ॐ शर्वाय देवाय नमः ।।२।।

ॐ ईशानाय देवाय नमः ।।३।।

ॐ पशुपतये देवाय नमः ।।४।।

ॐ रुद्राय देवाय नमः ।।५।।

ॐ उग्राय देवाय नमः ।।६।।

ॐ भीमाय देवाय नमः ।।७।।

ॐ महते देवाय नमः ।।८।।

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।।१।।

ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।।२।।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।।३।।

ॐ पशुपते र्देवस्य पत्न्यै नमः ।।४।।

ॐ रुद्रस्यर्देवस्य पत्न्यै नमः ।।५।।

ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।।६।।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः ।।७।।

ॐ महतो देवस्य पत्नयै नमः ।।८।।

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तुऽअस्तुऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

।। ततः अक्षतैश्च पूजनम् ।।

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः ।।१।।
ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ।।२।।
ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तये नमः ।।३।।
ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः ।।४।।
ॐ भीमाय आकाशमूर्त्तये नमः ।।५।।
ॐ पशुपतये जयमानमूर्त्तये नमः ।।६।।
ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः ।।७।।
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः ।।८।।

एवं सम्पूज्य।

।। तत सहस्रघटैः स्नपनम् ।।

(पुष्प व बिल्वपत्र युक्त जलधारा शिवलिंग पर छोड़े। यही हजार घड़ो से स्नान माना जाता है।)

ॐ सहस्राणि सहस्रशोबाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि।

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम्। तेषा ँ् सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।।

।। अथ षडक्षरस्तोत्रम् ।।

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।१।।

न जातिर्न मृतिर्यस्य क्षयो यस्य न विद्यते।
नमन्ति देवताः सर्वा नकारं तं नमाम्यहम्।।२।।

महादेवं महावक्त्रं महाध्यानपरायणम्।
महापापहरं देवं मकरं तं नमाम्यहम्।।३।।

शिवात्परतरो नास्ति शिवशास्त्रेषु निश्चयः।
शमन्ति सर्वपापानि शकारं तं नमाम्यहम्।।४।।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकि कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकारं तं नमाम्यहम्।।५।।
यत्र-यत्र स्थितोदेवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकारं तं नमाम्यहम्।।६।।
इदं षडक्षरस्तोत्रं प्रातरुत्थाय यः पठेत्
मुच्यते सर्व पापेभ्यः शिवलोकं स गच्छति॥ ७।।

।। पञ्चाक्षरस्तोत्रम् ।।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।१।।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नंदीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।२।।

शिवाय गौरी वन्दनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।३।।

वसिष्ठकुम्भोद्भव गौतमार्य मुनींद्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।५।।

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सः मोदते।।६।।

शिवपंचाक्षरस्तोत्र (हिन्दी अर्थ)

जिनके कण्ठ में साँपों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अंगराग (अनुलेपन) हैं, दिशाएँ ही जिनका वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न हैं), उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर 'न'कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।।१।।

गंगाजल और चन्दन से जिनकी अचर्ना हुई है, मन्दार– पुष्प तथा अन्यान्य कुसुमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रमथगणों के स्वामी महेश्वर 'म'कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।।२।।

जो कल्याण स्वरूप हैं, पार्वती जी के मुखकमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिये जो सूर्यस्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैल का चिन्ह है, उन शोभाशाली नीलकण्ठ 'शि'कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।।३।।

वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन 'व'कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।।४।।

जिन्होनें यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव 'य'कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।।५।।

जो शिव के समीप इस पवित्र पंचाक्षरस्तोत्र पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है और वहाँ शिव जी के साथ आनन्दित होता है।।६।।

ॐ

।। श्री शिवलिंगाष्टकस्तोत्रम्।।

ब्रह्म-मुरारि सुरार्चित-लिंगम् निर्मल-भसित-शोभित-लिंगम्।
जन्मजदुःख-विनाशक-लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।।१।।

देव-मुनि-प्रवरार्चित-लिंगम् कामदहं करुणाकर-लिंगम्।
रावण-दर्प-विनाशकलिंगम्, तत्प्रणमामि-सदाशिव-लिंगम्।।२।।

सर्वसुगन्धि-सुलेपित-लिंगम्, बुद्धि विवर्धन-कारण लिंगम्।
सिद्धसुरासुर-वंदित-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।३।।

कनक महामणि-भूषित-लिंगम्, फणिपतिवेष्टित-शोभित-लिंगम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशन-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।४।।

कुंकुम-चन्दन-लेपित-लिंगम्, पङ्कजहार-सुशोभित-लिंगम्
संञ्चित-पाप-विनाशन-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।५।।

देवगणार्चित-सेवित-लिंगम्, भावै-र्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिनकर-कोटि-प्रभाकर-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।।६।।

अष्टदलोपरिवेष्टित-लिंगम्, सर्वसमुद्‌भव-कारण-लिंगम्।
अष्ट दरिद्र-विनाशित-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।७।।

सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन पुष्प-सदार्चित लिंगम्
परात्परं-परमात्मक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।८।।

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

।। इति श्री शिव लिंगाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

लिंगाष्टकम् (हिन्दी अर्थ)

जो लिंग (स्वरूप) ब्रह्मा, विष्णु, एवं समस्त देवगणों द्वारा पूजित तथा निर्मल कान्ति से सुशोभित है और जो लिंग जन्मजन्य दुःख का विनाशक अर्थात् मोक्ष प्रदायक है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।१।।

जो शिवलिंग श्रेष्ठ देवगण एवं ऋषि–प्रवरों द्वारा पूजित, कामदेव को नष्ट करने वाला, करुणा की खान, रावण के घमण्ड को नष्ट, करने वाला है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।२।।

जो लिंग सभी दिव्य सुगन्धि (अगर–तगर–चन्दन आदि)–से सुलेपित, 'ज्ञानमिच्छेतु शंकरात्' इस उक्ति द्वारा बुद्धि–वृद्धिकारक, समस्त सिद्ध, देवता एवं असुरगणों से वन्दित है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।३।।

साम्बसदाशिव का लिंग रूप विग्रह सुवर्ण, माणिक्यादि महामणियों से विभूषित तथा नागराज द्वारा वेष्टित (लिपटे) होने से अत्यन्त सुशोभित है और (अपने श्वसुर) दक्ष–यज्ञ का विनाशक है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।४।।

सदाशिव का लिंग रूप विग्रह (शरीर) कुंकुम, चन्दन आदि से लेपित (पुता हुआ), दिव्य कमल की माला से सुशोभित और अनेक जन्म–जन्मान्तर के संचित पाप को नष्ट करने वाला है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।५।।

भावभक्ति द्वारा समस्त देवगणों से पूजित एवं सेवित, करोड़ों सूर्यों की प्रखर कान्ति से युक्त उस भगवान सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।६।।

अष्टदल कमल से वेष्टित सदाशिव का लिंगरूप विग्रह सभी चराचर (स्थावर–जंगम)–की उत्पत्तिका कारणभूत एवं अष्ट दरिद्रों का विनाशक है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।७।।

जो लिंग देवगुरू बृहस्पति एवं देवश्रेष्ट इन्द्रादि के द्वारा पूजित, निरन्तर नन्दवन के दिव्य पुष्पों द्वारा अर्चित, परात्पर एवं परमात्मस्वरूप है, उस सदाशिव–लिंग को मैं प्रणाम करता हूँ।।८।।

जो साम्ब–सदाशिव के समीप पुण्यकारी इस 'लिंगाष्टक' का पाठ करता है, वह निश्चित ही शिवलोक (कैलास)– में निवास करता है तथा शिव के साथ रहते हुए अत्यन्त प्रसन्न होता है, ।।६।।

।।अष्टोत्तरशतशिवनामावली पूजा।।

(शिव के 108 नामों से पुष्प-अक्षत अथवा बिल्वपत्र आदि से शिव पूजन करें)-

1. ॐ शिवाय नमः
2. ॐ महेश्वराय नमः
3. ॐ शम्भवे नमः
4. ॐ पिनाकिने नमः
5. ॐ शशिशेखराय नमः
6. ॐ वामदेवाय नमः
7. ॐ विरूपाक्षाय नमः
8. ॐ कपर्दिने नमः
9. ॐ नीललोहिताय नमः
10. ॐ शंकराय नमः
11. ॐ शूलपाणये नमः
12. ॐ खट्वाङ्गिने नमः
13. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
14. ॐ शिपिविष्टाय नमः
15. ॐ अम्बिकानाथाय नमः
16. ॐ श्रीकण्ठाय नमः
17. ॐ भक्तवत्सलाय नमः
18. ॐ भवाय नमः
19. ॐ शर्वाय नमः
20. ॐ त्रिलोकेशाय नमः
21. ॐ शितिकण्ठाय नमः
22. ॐ शिवाप्रियाय नमः
23. ॐ उग्राय नमः
24. ॐ कपालिने नमः
25. ॐ कामारये नमः
26. ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः
27. ॐ गंगाधराय नमः
28. ॐ ललाटाक्षाय नमः
29. ॐ कालकालाय नमः
30. ॐ कृपानिधये नमः
31. ॐ भीमाय नमः
32. ॐ परशुहस्ताय नमः
33. ॐ मृगपाणये नमः
34. ॐ जटाधराय नमः
35. ॐ कैलासवासिने नमः
36. ॐ कवचिने नमः
37. ॐ कठोराय नमः
38. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
39. ॐ वृषांकाय नमः
40. ॐ वृषभारूढाय नमः
41. ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
42. ॐ सामप्रियाय नमः
43. ॐ स्वरमयाय नमः
44. ॐ त्रिमूर्त्तये नमः
45. ॐ अनीश्वराय नमः
46. ॐ सर्वज्ञाय नमः
47. ॐ परमात्मने नमः
48. ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय नमः
49. ॐ हविषे नमः
50. ॐ यज्ञमयाय नमः

51. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
52. ॐ सदाशिवाय नमः
53. ॐ विश्वेश्वराय नमः
54. ॐ वीरभद्राय नमः
55. ॐ गणनाथाय नमः
56. ॐ प्रजापतये नमः
57. ॐ हिरण्यरेतसे नमः
58. ॐ दुर्धर्षाय नमः
59. ॐ गिरीशाय नमः
60. ॐ गिरिशाय नमः
61. ॐ अनघाय नमः
62. ॐ भुजंगभूषणाय नमः
63. ॐ भर्गाय नमः
64. ॐ गिरिधन्वने नमः
65. ॐ गिरिप्रियाय नमः
66. ॐ अष्टमूर्त्तये नमः
67. ॐ अनेकात्मने नमः
68. ॐ सात्त्विकाय नमः
69. ॐ शुभविग्रहाय नमः
70. ॐ शाश्वताय नमः
71. ॐ खण्डपरशवे नमः
72. ॐ अजाय नमः
73. ॐ पाशविमोचकाय नमः
74. ॐ कृत्तिवाससे नमः
75. ॐ पुरारातये नमः
76. ॐ भगवते नमः
77. ॐ प्रथमाधिपाय नमः
78. ॐ मृत्युंजयाय नमः
79. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
80. ॐ जगद्व्यापिने नमः
81. ॐ जगद्गुरवे नमः
82. ॐ व्योमकेशाय नमः
83. ॐ महासेनाय नमः
84. ॐ जनकाय नमः
85. ॐ चारुविक्रमाय नमः
86. ॐ रुद्राय नमः
87. ॐ भूतपतये नमः
88. ॐ स्थाणवे नमः
89. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
90. ॐ दिगम्बराय नमः
91. ॐ मृडाय नमः
92. ॐ पशुपतये नमः
93. ॐ देवाय नमः
94. ॐ महादेवाय नमः
95. ॐ अव्ययाय नमः
96. ॐ हरये नमः
97. ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः
98. ॐ भगनेत्रभिदे नमः
99. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
100. ॐ अव्यग्राय नमः
101. ॐ अव्यक्ताय नमः
102. ॐ अनन्ताय नमः
103. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
104. ॐ सहस्राक्षाय नमः
105. ॐ तारकाय नमः
106. ॐ हराय नमः
107. ॐ सहस्रपदे नमः
108. ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देवदयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।५।।

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रेघृतं पायसम्
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।।६।।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलम्
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।७।।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।८।।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।९।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

ॐ नमोऽस्तु भगवन्विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय मृत्युञ्जयाय त्रिपुरुषाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकालाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय सर्वेश्वराय सदा शिवाय श्री महादेवाय नमः।

अनेन पूजनेन श्री भवानीशंकरौ प्रीयेताम्॥

॥श्री शिवार्पणमस्तु॥

।।इति वैदिक रुद्रार्चन पद्धतिःसमाप्ताः।।

शिवमानस पूजा (हिन्दी अर्थ)

हे दयानिधे ! हे पशुपते ! हे देव ! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, अनेक रत्नावलिविभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरिकागन्धसमन्वित चन्दन, जुही, चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक (पूजोपहार) ग्रहण कीजिए ।।1।।

मैंने नवीन रत्नखण्डों से खचित सुवर्ण पात्र में घृतयुक्त खीर, दूध और दधिसहित पाँच प्रकार का व्यंजन, कदलीफल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल तथा ताम्बूल –ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं ; प्रभो! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए।।2।।

छत्र, दो चँवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभीके वाद्य, गान और नृत्य, साष्टांग प्रणाम, नानाविधि स्तुति–ये सब में संकल्प से आपको समर्पण करता हूँ; प्रभो! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिए ।।3।।

हे शम्भो! मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर हैं, सम्पूर्ण विषयभोग की रचना आपकी पूजा हैं, निद्रा समाधि हैं, मेरा चलना–फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं, इस प्रकार मैं जो–जो भी कार्य करता हूँ, वह सब आपकी आराधना ही है।।4।।

हाथों से, पैरों से, वाणी से, शरीर से, कर्म से, कर्णों से, नेत्रों से अथवा मनसे भी जो अपराध किये हों, वो विहित हों अथवा अविहित, उन सबको हे करुणासागर महादेव शम्भो! आप क्षमा कीजिये। आपकी जय हो, जय हो।।5।।

अथ षडङ्गन्यास

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं।
य्यज्ञ६ समिमन्दधातु। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ।।
ॐ हृदयाय नमः।।१।।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वाऽ इवप्प्रवयामुज्जिहानाः प्प्रभानवः सिस्त्रतेनाकमच्छ।।
ॐ शिरसे स्वाहा।।२।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्व्या व्वैश्श्वानरमृतऽआजातमग्निम्।
कवि६ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः।।
ॐ शिखायै वषट्।।३।।

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्।
उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ।।
ॐ कवचाय हुम्।।४।।

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुतव्विश्श्वतोमुखोव्विश्श्वतोबाहुरुतव्विश्श्वतस्प्पात्।
सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ।।
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वैषुरीरिषः ।
मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।।
ॐ अस्त्राय फट्।।६।।



।। ध्यानम् ।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसम्,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवरा भीतिहस्तंप्रसन्नम्।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्,
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ध्यानम्- भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

रुद्राष्टाध्यायी

प्रथमोऽध्यायः

श्री गणेशाय नमः।। हरिः ॐ गणानान्त्वागणपतिᳬं हवामहे। प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिᳬं हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिᳬं हवामहेव्वसोमम। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।।१।। गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासुह। बृहुत्त्युष्णिहाकुकुप्पसूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा।।२।।

द्विपदायाश्च्चतुष्प्पदास्त्रिपदायाश्च्चषट्पदाः।। व्विच्छन्दायाश्च्चसच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा।।३।। सुहस्तोमा सुहछन्दसऽआवृत ः सुहप्प्रमाऽऋषयः सुप्तदैव्व्याः। पूर्व्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽ अन्वालेभिरेरुत्थ्योनरश्मीन्।।४।। यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति।। दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।५।। येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिव्विदथेषुधीराः।। यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्नमेमनः शिवसङ्कल्प्प मस्तु।।६।।

यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।। यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।७।। येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम्।। येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।८।। यस्मिन्नृचः सामयजूᳬंषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः।। यस्मिँश्चित्तᳬं सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।९।। सुषारथिरश्श्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव।। हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।१०।।

इति रुद्रपाठे प्रथमोध्यायः।।१।।

द्वितीयोऽध्यायः

हरिः ॐ सुहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसुहस्रपात्।। सभूमिᳪसुर्व्व-
तस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठुद्दशाङ्गुलम्।।१।। पुरुषऽएवेदᳪ सर्व्वँय्यद्भूतँय्यच्च-
भाव्व्यम्।। उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्य-
महिमातोज्ज्यायाँश्च्चपूरुषः ।। पादोस्युव्विश्श्वाभूतानित्रिपादस्या-
मृतन्दिवि।।३।। त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः।। ततो-
व्विष्ष्वङ्व्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।।

ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः।। सजातोऽअत्यरिच्च्यत-
पश्च्चाद्भूमिमथोपुरः।।५।। तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृष-
दाज्ज्यम्।। पशूँस्ताँश्च्चक्क्रेव्वायव्व्यानारण्ण्याग्ग्राम्म्याश्च्चये।।६।।
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे।। छन्दाᳪसिजज्ञिरेतस्म्माद्य-
जुस्तस्म्मादजायत।।७।। तस्म्मादश्श्वाऽ अजायन्तयेकेचोभयादतः।।
गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः।।८।। तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौ-
क्षन्न्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः।। तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्च्चये।।९।।

यत्पुरुषंव्व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्पयन्।। मुखङ्किमस्स्यासीत्किम्बाहूकि-
मूरूपादाऽउच्च्येते।।१०।। ब्राह्मणोस्स्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः।
ऊरूतदस्स्ययद्वैश्श्यः पद्भ्याᳪ शूद्द्रोऽअजायत।।११।। चन्द्रमामनसो-
जातश्च्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत।। श्रोत्राद्वायुश्श्चप्प्राणश्श्चमुखाद्-
ग्ग्निरजायत।।१२।। नाभ्भ्याऽआसीदन्तरिक्षᳪशीष्ष्णोद्द्यौःसमवर्त्तत।।
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२।। ऽअकल्प्पयन्।।१३।।
यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत।। व्वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्म-
ऽइध्मःशरद्धविः।।१४।। सप्प्तास्यासन्न्पपरिधयस्त्रिःसप्प्तसमिधः कृताः।
देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबद्ध्नन्न्पुरुषम्पशुम्।।१५।।

य॒ज्ञेनय॒ज्ञमयजन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्माणिप्प्रथ॒माण्यासन्। तेह॒नाकम्महि॒-मानं÷ सचन्त॒यत्र॒पूर्व्वैसा॒द्ध्याःसन्ति॒देवाः॥१६॥ अ॒द्भ्यः सम्भृ॑तः पृथि॒व्यैरसाच्चवि॒श्वकर्म्मणः॒ समवर्त्त॒ताग्ग्रे॑। तस्य॒त्त्वष्टा॒वि॒दधद्रूपमेति-तन्मर्त्यस्यदेव॒त्वमा॒जान॒मग्ग्रे॥१७॥ व्वेदा॒हमे॒तम्पुरु॒षम्म॒हान्तमादि॒त्यव-र्ण्ण॒न्तम॑सः पु॒रस्तात्॥ तमे॒वव्वि॒दि॒त्त्वाति॑मृत्यु॒मे॑ति॒नान्यःपन्था॒व्विद्य॒ते-यना॑य॥१८॥ प्र॒जाप॑तिश्च्चरति॒गर्ब्भेऽअ॒न्तरजा॑यमानो बहु॒धाव्वि-जा॑यते॥ तस्य॒योनि॒म्परि॑पश्श्यन्ति॒धीरा॒स्तस्मि॑न्हतस्थु॒र्ब्भुव॑नानि॒व्वि-श्श्वा॥१९॥॥

योदे॒वेब्भ्य॒ऽआ॒तप॑ति॒योदे॒वाना॑म्पु॒रोहि॑तः॥ पूर्व्वो॒यो दे॒वब्भ्यो॒-जा॒तोनमो॒रु॒चाय॒ब्ब्राह्म॑ये॥२०॥ रु॒चम्ब्रा॒ह्मञ्ज॒नयन्तोदे॒वाऽअग्ग्रे॒त-दब्ब्रुवन्॥ यस्त्वै॒वंब्ब्रा॒ह्मणो व्वि॒द्यात्तस्य॑दे॒वाऽअस॒न्वशे॑॥२१॥ श्रीश्च्चतेल॒क्ष्मीश्च्च॒पत्क्न्या॑वहोरा॒त्रेपा॒श्श्वेनक्षत्रा॑णिरू॒पम॒श्श्विनौ॒व्व्यात्तम्। इ॒ष्ष्णन्निषाणा॒मुम्म॑ऽइषाणसर्व्वलो॒कम्म॑ऽइषाण॥२२॥

॥ इति रुद्रपाठे द्वितीयोऽध्यायः॥२॥



तृतीयोऽध्यायः

हरिं÷ॐ आशुः शिशानोव्वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्च्चर्ष-
णीनाम्।। सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साक-
मिन्द्रः÷।।१।। सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्त्कारेणदुश्च्यवनेन-
धृष्णुना।। तदिन्द्रेणजयततत्सहद्ध्वँय्युधोनरऽइषुहस्तेनव्वृष्णा।।२।।
सऽइषुहस्तैःसनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳस्त्रष्टासयुधऽइन्द्रोगणेन।। सꣳसृष्ट-
जित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्ग्रधन्न्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता।।३।। बृहस्प्पते-
परिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२।। ऽअपबाधमानः ।। प्प्रभञ्जन्त्सेनाःप्र-
मृणोयुधाजयन्नस्म्माकमेद्ध्यविताररथानाम्।।४।।

बलविज्ञाय स्त्थविरःप्प्रवीरः सहस्वाञ्वाजीसहमानऽउग्ग्रः।। अभि-
वीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित्।।५।। गोत्रभिद-
ङ्गोविदंव्वज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा।। इमꣳसजाताऽअनुवी-
रयद्ध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनुसꣳरभद्ध्वम्।।६।। अभिगोत्राणिसहसा-
गाहमानोदयोव्वीरःशतमन्न्युरिन्द्रः÷।। दुश्च्व्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्यो-
स्म्माकꣳसेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु।।७।। इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः
पुरऽएतुसोमः÷।। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्व-
ग्ग्रम्।।८।।

इन्द्रस्यव्वृष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरुताꣳशर्द्धऽउग्ग्रम्।।
महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात्।।९।। उद्धर्ष-
यमघवन्नायुधान्न्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाꣳसि।। उद्वृत्रहन्व्वाजिनांव्वा-
जिनान्न्युद्रथानाञ्जयताँय्यन्तुघोषाः।।१०।। अस्म्माकमिन्द्रः समृतेषुद्-
ध्वजेष्ष्वस्म्माकँय्याऽइषवस्ताजयन्तु।। अस्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्व-
स्म्माँ२।। ऽउदेवाऽअवताहवेषु।।११।। अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती-

गृहाणाङ्गान्यप्प्वेपरैहि।। अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा-सचन्ताम्।।१२।। अवसृष्टापरापतशरव्येब्ब्रह्मसᳪशिते।। गच्छामि-त्रान्प्रपद्यस्वमामी षाङ्कञ्चनोच्छिषᳪ ।।१३।।

प्रेताजयतानरऽइन्द्रोवᳪ शर्म्मयच्छतु।। उग्रावः सन्तु बाहवोनाधृ-ष्यायथासथ।।१४।। असौयासेनामरुतᳪ परेषामब्भ्यैतिनऽओजसा-स्प्पद्धमाना।। ताङ्गूहततमसापव्व्रतेनयथामीऽअन्न्योऽअन्न्यन्न-जानन्।।१५।। यत्रबाणाःसम्पतन्तिकुमाराविशिखाऽइव।। तन्नऽइन्द्रो-बृहस्प्पतिरदितिᳪ शर्म्मयच्छतुव्विश्श्वाहाशर्म्मयच्छतु।।१६।। मर्म्माणि-तेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्।। उरोर्व्वरीयो-व्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।।१७।।

।। इति रुद्रपाठे तृतीयोध्यायः ।।३।।



चतुर्थोऽध्यायः

हरिः विभ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्।।
व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्विराजति।।१।। उदु-
त्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः।। दृशेव्विश्श्वाय सूर्य्यम्।।२।।येना-
पावकचक्षसाभुरण्ण्यन्तञ्जनाँ२।।ऽअनु।। त्वंव्वरुणपश्श्यसि।।३।।
दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतंरथेनसूर्य्यत्वचा।। मद्ध्वायज्ञंसमञ्जाथे।।
तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्शिचत्रन्देवानाम्।।४।। तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथा-
व्विश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदंस्वर्व्विदम्।। प्रतीचीनंव्वृज-
नन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे।।५।।

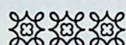
अयंव्वेनश्चचोदयत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमाने।।
इममपांसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्नव्विप्रामतिभीरिहन्ति।।६।। चित्रन्देवा-
नामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्नेः।। आप्प्राद्यावापृथिवी-
ऽअन्तरिक्षंसूर्य्यऽआत्क्माजगतस्तस्थुषश्च्च।।७।। आनऽइडाभिर्व्वि-
दथेसुशस्तिव्विश्श्वानरः सवितादेवऽएतु।। अपियथायुवानोमत्स-
थानोव्विश्श्वञ्जगदभिपित्त्वेमनीषा।।८।। यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽ-
अभिसूर्य्य।। सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे।।९।। तरणिर्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्यो-
तिष्कृदसिसूर्य्य।। व्विश्श्वमाभासिरोचनम्।।१०।।

तत्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततं सञ्जभार।। यदेद-
युक्तहरितः सधस्त्थादाद्द्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्म्मै।।११।। तन्मित्रस्य
व्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्त्थे।। अनन्तमन्न्यद्रुशद-
स्यपाजः कृष्ण्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति।।१२।। बण्णमहाँ२।।ऽअसि-
सूर्य्यबडादित्त्यमहाँ२।।ऽअसि।। महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेव-
महाँ२।।ऽअसि।।१३।। बट्सूर्य्य श्श्रवसामहाँ२।। ऽअसिसत्रादेव-

मुहाँ२।।ऽअसि।। मुन्द्राादेवानामसुर्ष्य्रः पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिर-
दोब्भ्यम्।।१४।।

श्रायन्तऽइवसूर्ष्यंव्विश्शवेदिन्द्रस्य भक्षत।। व्वसूनिजातेजनमान-
ऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम।।१५।। अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरꣳ हसꣳ
पिपृतानिरवद्यात्।। तन्नोमित्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिःꣳ सिन्धुः पृथिवी-
ऽउतद्यौः।।१६।। आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च।।
हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानि पश्यन्।।१७।।

।। इति रुद्रपाठे चतुर्थोऽध्यायः।।४।।



पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः।। बाहुब्भ्यामुत-
तेनमः।।१।। य़ातेरुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी।। तयान-
स्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। य़ामिषुङ्गिरिशन्त-
हस्तेबिभर्ष्यस्तवे।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमा हिᳬसीः पुरुषञ्जगत्।।३।।
शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशाच्छाव्वदामसि।। य़थानः सर्व्वमिज्ज-
गदयक्ष्मᳬसुमनाऽअसत्।।४।।

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक्।। अहीँश्च्चसर्व्वा-
ञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्चय़ातुधान्न्योधराचीः परासुव।।५।। असौयस्ताम्म्रो-
ऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः।। य़ेचैनᳬरुद्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः
सहस्त्रशोवैषाᳬहेडऽईमहे।।६।। असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्वि-
लोहितः।। उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयाति नः।।७।।
नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्त्राक्षायमीढुषे।। अथोयेऽअस्यसत्त्वानो-
हन्तेब्भ्योऽकरन्नमः।।८।। प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योर्-
ज्ज्याम्।। य़ाश्च्चतेहस्तऽइषवः परातभगवोव्वप।।९।।

व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२।।ऽउत।। अनेशन्न-
स्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः।।१०।। य़ातेहेतिर्म्मीढुष्टम-
हस्तेबभूवतेधनुः।। तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्ममयापरिभुज।।११।।
परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृणक्तुव्विश्श्वतः।। अथोयऽइषुधिस्तवारेऽ-
अस्म्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्त्यधनुष्ट्वᳬसहस्त्राक्षशतेषुधे।।
निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव।।१३।। नमस्तऽआयुधा-
यानाततायधृष्ष्णवे।। उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने।।१४।।

मानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्।।

मानौव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिषः।।१५।।
मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानो-
व्वीरान्नुद्द्रभामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।।१६।। नमो-
हिरण्ण्यबाहवेसेनान्न्येदिशाञ्चपतयेनमोनमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यः
पशूनाम्पतयेनमो नमः शष्प्पिञ्जरायत्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमो
नमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्ट्टानाम्पतयेनमोनमो बब्भ्लुशाय।।१७।।

नमोबब्भ्लुशायव्व्याधिनेन्नानाम्पतयेनमोनमोभुवस्स्यहेत्त्यैजगताम्प-
तयेनमोनमोरुद्द्रायाततायिनेक्षेत्त्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाहन्त्यैव्वना-
नाम्पतयेनमोनमोरोहिताय।।१८।। नमोरोहितायस्त्थपतयेव्वृक्षाणाम्प-
तयेनमोनमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोमन्त्रिणेव्वा-
णिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैग्घोषायाक्क्रन्दयतेपत्तीनाम्पतये-
नमोनमः कृत्स्नायतया।।१९।।

नमः कृत्स्नायतयाधावतेसत्त्वनाम्पतयेनमोनमः सहमानाय-
निव्व्याधिनऽआव्व्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणेककुभायस्तेनानाम्प
तयेनमोनमोनिचेरवेपरिचरायारण्ण्यानाम्पतयेनमोनमोव्वञ्चते।।२०।।
नमोव्वञ्चतेपरिवञ्चते स्तायूनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणऽइषुधिम-
तेतस्क्कराणाम्पतयेनमोनमः सृकायिब्भ्योजिघांसद्भ्योमुष्णताम्पतये
नमोनमोसिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्योव्विकृन्तानाम्पतयेनमः।।२१।।

नमऽउष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भ्यो-
धन्न्वायिब्भ्यश्च्चवोनमोनमऽआतन्न्वानेब्भ्यः प्रतिदधानेब्भ्यश्श्चवो-
नमोनमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्च्चवोनमोनमोव्विसृजद्भ्यः।।२२।।
नमोव्विसृजदभ्योव्विद्ध्यद्भ्यश्च्चवोनमोनमः स्वपद्भ्योजाग्ग्रद्भ्यश-
च्चवोनमोनमःशयानेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्च्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधाव-

द्भ्यश्च्चवोनमोनमं÷सभाब्भ्यं÷।।२३।।

नमं÷सभाब्भ्यं÷सभापतिब्भ्यश्च्चवोनमोनमोश्श्वेब्भ्योश्श्वपतिब्भ्यश्च्चवोनमोनमंऽआव्व्याधिनीब्भ्योव्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च्चवोनमोनमऽउर्गणाब्भ्यस्तृंहतीब्भ्यश्च्चवोनमोनमोंगणेब्भ्यं÷।।२४।। नमोंगणेब्भ्योंगणपतिब्भ्यश्च्चवो नमोनमोव्व्रातेब्भ्योव्व्रातपतिब्भ्यश्च्चवोनमोनमोगृत्सेब्भ्योगृत्सपतिब्भ्यश्च्चवोनमोनमोव्विरूपेब्भ्योव्विश्श्वरूपेब्भ्यश्च्चवोनमोनमः सेनाब्भ्यः।।२५।। नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च्चवोनमोनमोंरथिब्भ्योंऽअरथेब्भ्यश्च्चवोनमोनमं÷क्षत्तृब्भ्यं÷सङ्ग्रहीतृब्भ्यश्च्चवोनमोनमोंमहद्भ्योंऽअर्ब्भकेब्भ्यश्च्चवोनमं÷।।२६।।

नमस्तक्षब्भ्योरथकारेब्भ्यश्च्चवोनमोनमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च्चवोनमोनमोंनिषादेब्भ्यं÷पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च्चवोनमोनमं÷ श्श्वनिब्भ्योंमृगयुब्भ्यश्श्चवोनमोनमः श्श्वब्भ्यं÷।।२७।। नमःश्श्वब्भ्यः श्श्वपतिब्भ्यश्च्चवो नमोनमोंभवायचरुद्द्रायचनमं÷शर्व्वायचपशुपतयेचनमोनीलग्ग्रीवायचशितिकण्ठायचनमं÷कपर्द्दिने।।२८।। नमं÷कपर्द्दिनेचव्व्युप्तकेशायच नमं÷सहस्राक्षायचशतधन्न्वनेचनमोंगिरिशयायचशिपिविष्टायचनमोंमीढुष्टमायचेषुमते च नमोंह्रस्वाय।।२९।।

नमोंह्रस्वायचव्वामनायचनमोंबृहतेचव्वर्षीयसेचनमोंव्वृद्द्धायचसवृधेचनमोऽग्ग्र्यायचप्प्रथमायचनमंऽआशवे।।३०।। नमंऽआशवेचाजिरायचनमः शीग्घ्र्यायचशीब्भ्यायचनमऽऊर्म्म्यायचावस्वन्न्यायचनमोंनादेयायचद्द्वीप्प्यायच।।३१।। नमोंज्ज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमं÷पूर्व्वजायचापरजायचनमोंमद्ध्यमायचापगल्भायचनमोंजघन्न्यायचबुध्न्यायचनमःसोब्भ्याय।।३२।।

नमः॑ सोभ्य्याय चप्प्रतिसर्य्याय च नमो याम्य्याय च क्षेम्य्याय च नमः॑ श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च नम ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च नमो व्वन्न्याय ।।33।। नमो व्वन्न्याय च कक्ष्याय च नमः॑ श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च नम ऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः॑ शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने ।।३४।। नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च नमः॑ श्श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्न्याय च नमो धृष्णवे ।।३५।।

नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः॑ स्वायुधाय च सुधन्वने च ।।३६।। नमः॑ स्रुत्याय च पत्थ्याय च नमः॑ काट्याय च नीप्प्याय च नमः॑ कुल्ल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च नमः॑ कूप्प्याय ।।३७।। नमः॑ कूप्प्याय चावट्याय च नमो व्वीदद्ध्याय चातप्प्याय च नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्याय च नमो व्वर्ष्याय चाव्वर्ष्याय च नमो व्वात्त्याय ।।३८।।

नमो व्वात्त्याय च रेष्म्याय च नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च नमः॑ सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः॑ शङ्गवे ।।३९।। नमः॑ शङ्गवे च पशुपतये च नम ऽउग्ग्राय च भीमाय च नमो ऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ।।४०।। नमः॑ शम्भवाय च मयोभवाय च नमः॑ शङ्कराय च मयस्क्कराय च नमः॑ शिवाय च शिवतराय च ।।४१।।

नमः॑ पार्य्याय चावार्य्याय च नमः॑ प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्ल्याय च नमः॑ शष्प्याय च फेन्न्याय च नमः॑ सिकत्त्याय ।।४२।। नमः॑ सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च नमः॑ किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः॑ कपर्द्दिने च पुलस्तये च नम ऽइरिण्याय च प्प्रपत्थ्याय च नमो व्व्रज्ज्याय ।।४३।। नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्प्याय च-

गेह्य्यायचनमौहृदय्य्यायचनिवेष्प्प्यायचनमःकाट्ट्यायचगह्वरेष्ठाय-
चनमः शुष्क्याय।।४४।।

नमःशुष्क्कयायचहरित्यायचनमः पाꣳसव्व्यायचरजस्यायचनमोलो-
प्प्यायचोलप्प्यायचनमऽऊर्व्व्यायचसूर्व्व्यायचनमः पर्ण्णाय।।४५।।
नमः पर्ण्णायचपर्ण्णशदायचनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमऽआखि-
दतेचप्प्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्च्चवोनमोनमौवःकिरि-
केब्भ्यौदेवानाꣳहृदयेब्भ्योनमौव्विचिन्न्वत्केब्भ्योनमौव्विक्षिणत्केब्भ्यो-
नमऽआनिर्हतेब्भ्यः।।४६।।

द्द्रापेऽअन्धसस्प्पतेदरिद्द्रनीललोहित।। आसाम्प्रजानामेषाम्प-
शूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनःकिञ्चनाममत्।।४७।। इमारुद्द्रायतवसेकपर्द्दि-
नैक्षयद्वीरायप्प्रभरामहेमतीः।। यथाशमसद्द्विपदेचतुष्प्पदेव्विश्श्वम्पुष्ट-
ङ्ग्रामैऽअस्म्मिन्ननातुरम्।।४८।। यातेरुद्द्रशिवातनूः शिवाव्विश्श्वाहा-
भेषजी।। शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे।।४९।। परिनोरुद्द्रस्यहे-
तिर्व्वृणक्तुपरित्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः।। अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्व-
मीढ्वस्तोकायतनयायमृड।।५०।।

मीढुष्ट्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव।। परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय-
कृत्तिंव्वसानऽआचरपिनाकम्बिब्भ्रदागहि।।५१।। व्विकिरिद्द्रव्विलोहित-
नमस्तेऽअस्तुभगवः।। यास्तैसहस्र्रꣳहेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः।।५२।।
सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः।। तासामीशानोभगवः पराचीना-
मुखाकृधि।।५३।। असङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्द्राऽअधिभूम्म्याम्।।
तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि।।५४।। अस्म्मिन्महत्त्यर्ण्णवे-
न्तरिक्षैभवाऽअधि।।तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि।।५५।।

नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठादिवꣳरुद्द्राऽउपश्श्रिताः।। तेषाꣳसहस्रयो-

जुनेवुधनन्वानितन्मसि।।५६।। नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठाःशुर्व्वाऽअुधः क्षमाचुराः।। तेषांᳫँसहस्त्रयोजुनेवुधन्न्वानितन्मसि।।५७।। येव्वृक्षेषु-शुष्प्पिञ्जरानीलग्ग्रीवाुव्विलोहिताः ।। तेषांᳫँसहस्त्रयोजुनेवुधन्न्वा-नितन्मसि।।५८।। येभूतानामधिपतयोव्विशिुखासः कपुर्द्दिनः ।। तेषां-ᳫँसहस्त्रयोजुनेवुधन्न्वानितन्मसि।।५९।। येपुथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदा-ऽआयुर्व्युधः ।। तेषांᳫँसहस्त्रयोजुनेवुधन्न्वानितन्मसि।।६०।।

येतीर्त्थानिप्प्रचरन्तिसृकाहस्तानिषुङ्गिणः ।। तेषांᳫँसहस्त्रयोजुने-वुधन्न्वानितन्मसि।।६१।। येन्नेषुव्विविद्ध्यन्तिपात्त्रेषुपिबतोजनान्।। तेषांᳫँ सहस्त्रयोजुनेवुधन्न्वानितन्मसि।।६२।। यऽएतावन्तश्श्चुच-भूयांᳫँसश्श्चु दिशोरुुद्राव्वितस्थिरे।। तेषांᳫँसहस्त्रयोजुनेवुधन्न्वा-नितन्मसि।।६३।। नमोस्तुरुद्रेब्भ्योयेदिुविय्येषांव्वर्षमिषवः।। तेब्भ्यो-दशुप्प्राचीर्द्दशदक्षिुणादशप्प्रतीचीुर्द्दशोुद्ध्वाः।। तेब्भ्योुनमोऽअस्तुतेनो-वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः।।६४।।

नमोस्तुरुद्रेब्भ्योुयेन्तरिक्षेयेषांुव्वातऽइषवः ।। तेब्भ्योुदशुप्प्राची-र्द्दशदक्षिुणादशप्प्रुतीचीुर्द्दशोदीचीुर्द्दशोुद्ध्वाः।। तेब्भ्योुनमोऽअस्तुतेनो-वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्श्चनोुद्वेष्टितमैषाुञ्जम्भेदद्ध्मः।।६५।। नमोस्तुरुुद्रेब्भ्योुयेपृथिुव्व्यांय्येषामन्नमिषवः ।। तेब्भ्योुदशुप्प्राचीर्द्दश-दक्षिुणादशप्प्रुतीचीुर्द्दशोदीचीर्द्दशोुद्ध्वाः ।। तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनो-वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विुष्म्मोयश्श्चनोुद्वेष्टितमैषाञ्जम्भेदद्ध्मः।।६६।।

।। इति रुद्रपादे पञ्चमोऽध्याय।।५।।

षष्ठोऽध्यायः

हरिः ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः।। प्रजावन्तꣳसचेमहि।।१।। एषतेरुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः।।२।। अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम्।। यथानोव्वस्यसस्करद्यथानःश्रेयसस्करद्यथानोव्यवसाययात्।।३।। भेषजमसिभेषजङ्गवेश्श्वायपुरुषायभेषजम्।। सुखम्मेषायमेष्यै।।4।।

त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।। त्र्यम्बकँ य्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः।।५।।

एतत्तेरुद्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि।। अवततधन्वापिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिꣳसन्नःशिवोतीहि।।६।।

त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्।। यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्।।७।। शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः।। निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवीर्य्याय।।८।।

।। इति रुद्रपाठे षष्ठोऽध्याय।।६ ।।



सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्रश्च्चभीमश्च्चध्वान्तश्च्चधुनिश्च्च।। सासह्वाँ-श्च्चाभियुग्वाचव्विक्षिपःस्वाहा।।१।।

अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्ग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेनभवंय्यक्ना।। शर्व्वम्मतस्नाभ्यामीशानम्मन्न्युनामहादेवमन्तःपर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवंव्व-निष्ठुनाव्वसिष्ठुहनुःशिङ्गीनिकोश्याभ्याम्।।२।।

उग्ग्रँल्लोहितेनमित्रꣳसौव्व्रत्त्येनरुद्रन्दौव्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेनमरुतो-बलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा।। भवस्यकण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तःपाश्श्व्यम्महादेवस्यय-कृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुःपशुपतेःपुरीतत्।।३।। लोमभ्भ्यःस्वाहालोमभ्भ्यः स्वाहात्वचेस्वाहात्वचेस्वाहालोहितायस्वाहालोहितायस्वाहामेदोभ्भ्यः-स्वाहामेदोभ्भ्यः स्वाहा।। माꣳसेभ्भ्यः स्वाहामाꣳसेभ्भ्यःस्वाहास्नाव-भ्भ्यःस्वाहास्नावभ्भ्यःस्वाहास्त्थभ्भ्यः स्वाहास्त्थभ्भ्यः स्वाहामज्जभ्भ्यः-स्वाहामज्जभ्भ्यःस्वाहा।। रेतसेस्वाहापायवेस्वाहा।।४।।

आयासायस्वाहाप्प्रायासायस्वाहासँय्यासायस्वाहाव्वियासायस्वाहोद्-द्यासायस्वाहा।। शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहाशोचमानायस्वाहाशोकाय-स्वाहा।।५।। तपसेस्वाहातप्प्यतेस्वाहातप्प्यमानायस्वाहातप्तायस्वाहा घर्म्मायस्वाहा।। निष्कृत्यैस्वाहाप्प्रायश्चित्त्यैस्वाहाभेषजायस्वाहा।।६।। यमायस्वाहान्तकायस्वाहामृत्यवेस्वाहा।। ब्ब्रह्मणेस्वाहाब्ब्रह्महत्यायै-स्वाहाव्विश्श्वेभ्भ्योदेवेभ्भ्यः स्वाहाद्यावापृथिवीभ्भ्याꣳस्वाहा।।७।।

।। इति रुद्रपाठे सप्तमोऽध्याय।।७।।

अष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ व्वाजश्च्चमेप्प्रसवश्च्चमेप्प्रयतिश्च्चमेप्प्रसितिश्च्चमे-
धीतिश्च्चमेक्क्रतुश्च्चमेस्वरश्च्चमेश्श्लोकश्च्चमेश्श्रवश्च्चमेश्श्रुतिश्च्च-
मेज्ज्योतिः श्च्चमेस्स्वश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१।। प्प्राणश्च्चमेपानश्-
च्चमेव्व्यानश्च्चमेऽसुश्च्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेव्वाक्चमेमनश्च्चमे-
चक्षुश्च्चमेश्श्रोत्रञ्चमेदक्षश्च्चमेबलञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।२। ओज-
श्च्चमेसहश्च्चमऽआत्क्माचमेतनूश्च्चमेशर्म्मचमेव्वर्म्मचमेङ्गानिचमेस्थी-
निचमेपरूँ षिचमेशरीराणिचमऽआयुश्च्चमेजराचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।३।।

ज्यैष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमेमन्न्युश्च्चमेभामश्च्चमेमश्च्चमेऽम्भ-
श्च्चमेजेमाचमेमहिमाचमेव्वरिमाचमेप्प्रथिमाचमेव्वर्षिमाचमेद्राघिमाच-
मेव्वृद्धञ्चमेव्वृद्धिश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।४।। (नं०)[1]।। सत्त्य-
ञ्चमेश्श्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्च्चमेक्क्रीडाचमेमोद-
श्च्चमेजातञ्चमेजनिष्ष्यमाणञ्चमेसूक्क्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्प्प-
न्ताम्।।५।। ऋतञ्चमेमृतञ्चमेयक्ष्मञ्चमेऽनामयच्चमेजीवातु-
श्च्चमेदीर्ग्घायुत्त्वञ्चमेनमित्रञ्चमेभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमे-
सूषाश्च्चमेसुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।६।।

यन्ताचमेधर्त्ताचमेक्षमश्च्चमेधृतिश्च्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्च्चमे-
संव्विच्चमेज्ञात्रञ्चमेसूश्च्चमेप्प्रसूश्च्चमेसीरञ्चमेलयश्च्चमेयज्ञेन-
कल्प्पन्ताम्।।७।। शञ्चमेमयश्च्चमेप्प्रियञ्चमेनुकामश्च्चमे-
कामश्च्चमेसौमनसश्च्चमेभगश्च्चमेद्द्रविणञ्चमेभद्द्रञ्चमेश्श्रेय-
श्च्चमेव्वसीयश्च्चमेयशश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।८।। (नं०)।।
ऊक्क्चमेसूनृताचमेपयश्च्चमेरसश्च्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्ग्धिश्च्चमे-
सपीतिश्च्चमेकृषिश्च्चमेव्वृष्ट्टिश्च्चमेजैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेन-

कल्प्पन्ताम्।।९।। रयिश्च्चमेरायश्च्चमेपुष्ट्टञ्चमेपुष्ट्टिश्च्चमेव्विभु-
चमेप्प्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेक्षितञ्चमेन्नञ्चमेक्षुच्चमे-
यज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१०।।

व्वित्तञ्चमेव्वेद्यञ्चमेभूतञ्चमेभविष्ष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चम-
ऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्च्चमेक्लृप्प्तञ्चमेक्लृप्तिश्च्चमेमतिश्च्चमेसुमति-
श्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।११।। व्व्रीहयश्च्चमेयवाश्च्चमेमाषाश्च्चमे-
तिलाश्च्चमेमुद्गाश्च्चमेखल्ल्वाश्च्चमेप्रियङ्गवश्च्चमेणवश्च्चमेश्यामा-
काश्च्चमेनीवाराश्च्चमेगोधूमाश्च्चमेमसूराश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१२।।
(न०)।। अश्म्माचमेमृत्तिकाचमेगिरयश्च्चमेपर्व्वताश्च्चमेसिकता-
श्च्चमेव्वनस्प्पतयश्च्चमेहिरण्णयञ्चमेयश्च्चमेश्यामञ्चमेलोहञ्चमे-
सीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१३।।

अग्गिनश्च्चमऽआपश्च्चमेव्वीरुधश्च्चमऽओषधयश्च्चमेकृष्ट्टपच्च्या-
श्च्चमेकृष्ट्टपच्च्याश्च्चमेग्ग्राम्म्याश्च्चमेपशवऽआरण्णयाश्च्चमेव्वित्त-
ञ्चमेव्वित्तिश्च्चमेभूतञ्चमेभूतिश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१४।।
व्वसुचमेव्वसतिश्च्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्च्चमेत्त्थश्च्चमऽएमश्च्चमऽइत्त्या-
चमेगतिश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१५।। न०।। अग्गिनश्च्चम-
ऽइन्द्रश्च्चमेसोमश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेसविताचमऽइन्द्रश्च्चमेसरस्वतीचम-
ऽइन्द्रश्च्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्च्चमेबृहस्प्पतिश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेयज्ञेने-
कल्प्पन्ताम्।।१६।। मित्रश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेव्वरुणश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे-
धाताचमऽइन्द्रश्च्चमेत्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्च्चमेमरुतश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेव्वि-
श्श्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१७।

पृथिवीचमऽइन्द्रश्च्चमेन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्च्चमेद्यौश्च्चमऽइन्द्र-
श्च्चमेसमाश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेनक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्च्चमेदिशश्च्चमऽइन्द्र-

श्च्चमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्।।१८।। (न०)।। अꣳशुश्च्चमेरश्मिश्च्चमेऽदा-
ब्भ्यश्च्चमेधिपतिश्च्चमऽउपाꣳशुश्च्चमेन्तर्य्यामश्च्चमऽऐन्द्रवाय-
वश्च्चमेमैत्रावरुणश्च्चमऽआश्श्विनश्च्चमेप्प्रतिप्रस्त्थानश्च्चमेशुक्क्र-
श्च्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्।।१९।। आग्ग्रयणश्च्चमेव्वैश्श्व-
देवश्च्चमेद्ध्रुवश्च्चमेवैश्श्वानरश्च्चमऽऐन्द्राग्ग्नश्च्चमेमहावैश्श्वदेव-
श्च्चमेमरुत्त्वतीयाश्च्चमेनिष्क्कैवल्ल्यश्च्चमेसावित्रश्च्चमेसारस्वत-
श्च्चमेपात्क्नीवतश्च्चमेहारियोजनश्च्चमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्।।२०।।

स्स्रुचश्च्चमेचमसाश्च्चमेव्वायव्व्यानिचमेद्द्रोणकलशश्च्चमेग्ग्रावा-
णश्च्चमेधिषवणेचमेपूतभृच्चमऽआधवनीयश्च्चमेव्वेदिश्च्चमेबर्हि-
श्च्चमेवभृथश्च्चमेस्वगाकारश्च्चमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्।।२१।।(न०)।।
अग्ग्निश्च्चमेघर्म्मश्च्चमेक्कर्श्च्चमेसूर्य्यश्च्चमेप्प्राणश्च्चमेश्श्वमेध-
श्च्चमेपृथिवीचमेऽदितिश्च्चमेदितिश्च्चमेद्यौश्च्चमेङ्गुलयꣳशक्क्वरयो-
दिशश्च्चमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्।।२२।। व्व्रतञ्चमऽऋतवश्च्चमेत-
पश्च्चमेसंवत्सरश्च्चमैहोरात्रेऽऊर्व्वष्ठीवेबृहद्द्रथन्तरेचमेयज्ञेनकल्प्य-
न्ताम्।।२३।।(न०)।।

एकाचमेतिस्स्रश्च्चमेतिस्स्रश्च्चमेपञ्चचमेपञ्चमेसप्तचमेसप्तचमे-
नवचमेनवचमऽएकादशचमऽएकादशचमेत्रयोदशचमेत्रयोदशचमे-
पञ्चदशचमेपञ्चदशचमेसप्तदशचमेसप्तदशचमेनवदशचमेनवदश-
चमऽएकविꣳशतिश्च्चमऽएकविꣳशतिश्च्चमेत्रयोविꣳशतिश्च्च मेत्रयोविꣳ-
शतिश्च्चमे पञ्चविꣳशतिश्च्चमे पञ्चविꣳशतिश्च्चमे सप्प्तविꣳ-
शतिश्च्चमेसप्प्तविꣳशतिश्च्चमेनवविꣳशतिश्च्चमेनवविꣳशतिश्च्चम-
ऽएकत्रिꣳ शच्चमऽएकत्रिꣳशच्चमेत्रयस्त्रिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्प्यन्ताम्।।२४।।
(न०)।।

चतस्त्रश्च्चमेष्टौ चमेष्टौ चमे द्वादश चमे द्वादश चमे षोडश चमे-षोडशचमेव्विꣳशतिश्च्चमेव्विꣳशतिश्च्चमेचतुर्व्विꣳशतिश्च्चमेचतुर्व्विꣳ-शतिश्च्चमेष्टाविꣳशतिश्च्चमेष्टाविꣳशतिश्च्चमेद्वात्रिꣳशच्चमेद्वात्रिꣳशच्चमे-षट्त्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेचत्त्वारिꣳशच्चमेचत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्च्च-त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमेष्ष्टाचत्त्वारिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्प्प-न्ताम्।।२५।। (न०) त्र्यविश्च्चमेत्र्यवीचमेदित्त्यवाट्चमेदित्त्यौ-हीचमेपञ्चाविश्च्चमेपञ्चावीचमेत्रिवत्सश्च्चमेत्रिवत्साचमेतुर्य्यवाट्-चमेतुर्य्यौहीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।२६।।

पृष्ठवाट्चमेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमेव्वशाचमऽऋषभश्च्चमेव्वेहच्च-मेऽनड्वाँश्च्चमेधेनुश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।२७।। (न०)।। व्वाजाय-स्वाहाप्प्रसवायस्वाहापिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वाहाहर्प्पतये-स्वाहाह्नेमुग्ग्धायस्वाहामुग्ग्धायव्वैनꣳशिनायस्वाहाव्विनꣳशिनऽआन्त्याय-नायस्वाहान्त्यायभौवनायस्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहा-प्प्रजापतयेस्वाहा।। इयन्तेराण्णिम्मत्त्रायसन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्त्वा-व्वृष्टयैत्त्वाप्प्रजानान्त्वाधिपत्त्याय।।२८।।

आयुर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्प्प्राणोयज्ञेनकल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्प्पताꣳ-श्श्रोत्रँयज्ञेनकल्प्पताव्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनोयज्ञेनकल्प्पतामात्त्मायज्ञेन-कल्प्पताम्ब्रह्मायज्ञेनकल्प्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प्पताꣳस्वर्य्यज्ञेनकल्प्पताँ पृष्ठँय्यज्ञेनकल्प्पताँयज्ञोयज्ञेनकल्प्पताम्।। स्तोमश्च्चयजुश्च्चऽ-ऋक्क्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च।। स्वर्द्देवाऽअगन्म्मामृताऽअभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽअभूमव्वेट्स्वाहा।।२९।।

।। इति रुद्रपाठे अष्टोऽध्यायः।।



शान्त्यध्यायः

हरि÷ ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्येचक्षुः-श्श्रोत्रम्प्रपद्ये।। व्वागोजः÷ सहौजोमयिप्प्राणापानौ।।१।। यन्मेंच्छिद्द-ञ्चक्षुषोहृदयस्युमनसोव्वातितृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मेतद्दधातु।। शन्नोभवतु-भुवनस्ययस्पतिः÷।।२।। भूर्ब्भुवःस्वः÷। तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य-धीमहि।। धियोयोनः÷प्रचोदयात्।।३।। कयानश्चित्त्रऽआभुवदूती-सदावृधः÷सखा।। कयाशचिष्ठयाव्वृता।।४।।

कस्त्वासत्योमदानाम्मꣳ हिष्ठोमत्सदन्धसः।। दृढाचिदारुजे-व्वसु।।५।। अभीषुणःसखीनामविताजरितृणाम्।। शतम्भवास्यू-तिभिः÷।।६।। कयात्वन्नऽऊत्त्याभिप्रमन्दसेव्वृषन्।। कयास्तो-तृब्भ्यऽआभर।।७।। इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति।। शन्नोऽअस्तुद्विपदेशञ्च-तुष्पदे।।८।। शन्नोमित्रः शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा।। शन्नऽइन्द्रो-बृहस्पतिःशन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रमः।।९।। शन्नोव्वातः÷पवताꣳशन्नस्त-पतुसूर्य्यः÷।।शन्नःकनिक्क्रदद्देवःपर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु।।१०।।

अहानिशम्भवन्तुनः शꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम्।। शन्नऽइन्द्राग्ग्नी-भवतामवोभिःशन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्व्या।। शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौ-शमिन्द्रासोमासुवितायशँय्योः।।११।। शन्नोदेवीरभिष्ट्टयऽआपोभवन्तु-पीतये।। शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः।।१२।। स्योनापृथिविनोभवानृक्षरा-निवेशनी।। यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः।।१३।। आपोहिष्ठामयोभुवस्तानः-ऽऊर्ज्जेदधातन।। महेरणायचक्षसे।।१४।। योवः÷शिवतमोरसस्तस्य-भाजयतेहनः÷।। उशतीरिवमातरः÷।।१५।।

तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ।। आपोजनयथा-चनः।।१६।। द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः÷पृथिवीशान्तिरापःशान्ति-

रोषधयःशान्तिः।। व्वनस्पतयःशान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिः
सर्व्वंशान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि।।१७।। दृतेदृंहमामित्र-
स्यमाचक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम्।। मित्रस्याहञ्चक्षुषा-
सर्व्वाणिभूतानिसमीक्षे।। मित्रस्यचक्षुषासमीक्षामहे।।१८।। दृतेदृंहमा।
ज्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्व्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्व्यासम्।।१९।।
नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे।। अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः
पावकोऽअस्मभ्यंशिवोभव।।२०।।

नमस्तेऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे।। नमस्तेभगवन्नस्तुयतःस्वः
समीहसे।।२१।। यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु।। शन्नः
कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नःपशुभ्यः।।२२।। सुमित्रियानऽआपऽओषधयः
सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्मः।।२३।।
तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्।। पश्येमशरदः शतञ्जीवेम-
शरदः शतꣳशृणुयामशरदः शतम्प्रब्ब्रवामशरदःशतमदीनाः
स्यामशरदःशतम्भूयश्च्चशरदःशतात्।।२४।।

।। इति रुद्रपाठे शान्त्यध्यायः।।१।।



स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्याय:

हरिः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्श्ववेदाः।। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।१।। ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुँपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः।। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।२।। ॐ व्विष्णोरराटमसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्स्थोव्विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोऽसि।। व्वैष्णवमसिव्विष्णवेत्त्वा।।३।।

ॐ अग्निर्देवताव्वातोदेवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्रादेवतादित्यादेवतामरुतोदेवताव्विश्श्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवताव्वरुणोदेवता।।४।।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।५।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।६।। अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।७।।

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।८।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम्।।९।।

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः।। निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय।।१०।। ॐ व्विश्श्वानिदेवस वितर्दुरितानिपरासुव।। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।।११।।

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ

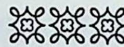
शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि।।१२।। ॐ सर्व्वेषां वा एषव्वे-
दानांᳪं रसो यत्सामसर्व्वेषामेवैनमेतद्वेदानाᳪं रसेनाभिषिञ्चति।।1३।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।।

।। इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः।।

।। इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता।।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

अनेन कृतेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयताम्, न मम।
ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु।।



क्षमा-प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥१॥

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥२॥

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव॥३॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥४॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥५॥

पश्चात् निम्नाङ्कित वाक्य कह कर यह पूजन-कर्म भगवान्‌को समर्पित करें।

'अनेन यथाशक्तिकृतेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम'।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

इति शिवपूजनविधिः।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्व्वायुषां तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे। आवीक्षि तस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।

स्वास्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ता सुखिनो भवन्तु।।

काले वर्षतु पर्जन्यः,
पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोयं क्षोमरहितः
ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः।।

शिव जी की आरती

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा,
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ।।ॐ हर ३ महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे,
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ।।ॐ हर ३ महादेव।।

दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहे,
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ।।ॐ हर ३ महादेव।।

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी,
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ।।ॐ हर ३ महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ।।ॐ हर ३ महादेव।।

करमध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता,
जगकर्त्ता जगहर्ता जगपालनकर्त्ता ।।ॐ हर ३ महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनो एका ।।ॐ हर ३ महादेव।।

काशी में विश्वनाथ विराजे, नन्दी ब्रह्मचारी
नित उठ भोग लगावत, सेवत नर नारी ।।ॐ हर ३ महादेव।।

त्रिगुण शिव की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ।।ॐ हर ३ महादेव।।

!! शंकर भगवान की जय !!

।।परिशिष्ट्म्।।

स्वर चिन्ह संकेत

लेखक- आचार्य वायुनन्दन मिश्र

उदात्त - कोई सांकेतिक चिन्ह नहीं होता।

अनुदान - अक्षरों के नीचे एक तीरछी रेखा।

स्वरित - अक्षरों के ऊपर एक खड़ी पाई।

१. स्वर संचालन में हस्ताकृति सर्प के फण के सदृश होना चाहिए।

मनुष्य तीर्थोच्चंकृत्त्वा पितृतीर्थोदकं व्रजेत्।
नामितं कर पृष्ठं तु सुव्यक्ताङ्गुलि मोक्षणम्।।

वेदाध्ययन करते समय स्वस्थ प्रसन्न चित्त नित्य क्रियाओं को पूर्ण कर गुरु वन्दनापूर्वक हरिः ॐ का मधुर ध्वनि व्याहृति सहित गायत्री मंत्र उच्चारण कर मेरु दण्ड एवं ग्रीवा को सीधा कर मध्यम क्रम में समवेत स्वर में स्पष्ट उच्चारण करना चाहिए। वेद मंत्रों के उच्चारण करते समय स्थित चित्त रहना चाहिये। हिलना, कम्पन करना, निरर्थक चर्चा करना, गीतिस्वर में उच्चारण करना निषेध है।

यथा- **गीती शीघ्री शिरः कम्पी यथालिखित पाठकः।**
अनर्थज्ञोऽल्प कण्ठश्च षडेते पाठकाऽधमाः।।
माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु, सुस्वरः।
धैर्यं लयसमत्त्वं च षडेते पाठकाः गुणाः।।
न कुर्वीति पदं दीर्घं न चाऽत्यन्तविलम्बितम्।
पदस्य ग्रह मोक्षौ च यथा शीघ्रगतिर्हयः।।
यथा वाणी तथा पाणी रिक्तं तु परिवर्जयेत्।
यत्र यत्र स्थिता वाणी पाणिस्तत्रैव तिष्ठति।।

वेद मन्त्रों के उच्चारण करते समय हस्तसंचालन अवश्य करना चाहिये, अतः हस्त संचालन सम्यक्तया हो इस उद्देश्य से वेद अध्येता को गुरुजी के

पास जाकर सम्यक्तया अध्ययन करना चाहिये, बिना हस्तसंचालन वेद मंत्रों के अध्ययन करने में अध्येता वियोनि को प्राप्त होता है।

यथा– **हस्तहीनं तु योऽ धीते स्वरवर्ण विवर्जितम्।**
ऋग्यजुः सामभिर्द्दग्धो वियोनिमधिगच्छति।।

हस्त संचालन में हस्तकृति, चुलू, नाव, स्फुट, दण्ड, स्वस्तिक, मुठ्ठी ये आकृतियाँ नहीं बनानी चाहिये। दायें हाथ को हृदय के सम्मुख कर हाथ की अँगुलियों को एकत्र कर अंगुष्ठ को पृथक कर अंगुल्यग्रभाग में सीधी दृष्टि कर, हाथ में जल रखने पर जल अंगूठे के नीचे से प्रवाह हो सके ऐसी हस्ताकृति होनी चाहिए अर्थात् नागफन की आकृति बनानी चाहिए।

यथा– **मनुष्य तीर्थोच्चं कृत्वा पितृतीर्थोदकं व्रजेत्।**
नामितं करपृष्ठं तु सुव्यक्ताङ्गुलि मोक्षणम्।।

वेद मंत्र उच्चारण करते समय मन्त्रान्त में प्रयुक्त होने वाले हल् वर्ण यथा- क् ट् ण् ङ् इत्यादि के उपस्थित होने पर तर्जनी अंगुली को अपनी ओर झुकाना चाहिये। प् हल् वर्ण प्राप्त होने पर पाँचों अंगुलियों को एक साथ जोड़ा चाहिये। त् हल् वर्ण होने पर तर्जनी एवं अंगुष्ठ के अग्रभाग गोलाकृति बनानी चाहिए। न् हल् वर्ण होने पर तर्जनी से अंगुठ के नाखून को स्पर्श करना चाहिये। म् हल् वर्ण होने पर मुठ्ठी बाँधना चाहिये।

यथा– **मुष्ट्याकृतिर्मकारे स्यान्नकारे तु नखग्रहः।**
ककारान्ते टकारान्ते ङणे तर्जनिकां नमेत्।
पंचागुल्यं पकारे च तकारे कुण्डलाकृतिः।।
कूर्माङ्गानीव संहृत्य चेष्टां दृष्टिं दृढ़ं मनः।
स्वस्थः प्रशान्तो निर्भीतो वर्णानुच्चारयेत् बुधः।।

– ऐसी आकृति मंत्रभाग में आने पर इसका उच्चारण "गु" ऐसा करना चाहिये एवं तर्जनी अंगुली को अंगुष्ठ से दाबकर हस्त संचालन करना चाहिये।

यथा-

हस्तहीनं तु योऽ धीते स्वरवर्ण विवर्जितम्।
ऋग्यजुः सामभिर्द्दग्धो वियोनिमधिगच्छति।।

हस्त संचालन में हस्तकृति, चुलु, नाव, स्फुट, दण्ड, स्वस्तिक, मुठ्ठी ये आकृतियाँ नहीं बनानी चाहिये। दायें हाथ को हृदय के सम्मुख कर हाथ की अँगुलियों को एकत्र कर अंगुष्ठ को पृथक कर अंगुल्यग्रभाग में सीधी दृष्टि कर, हाथ में जल रखने पर जल अंगूठे के नीचे से प्रवाह हो सके ऐसी हस्ताकृति होनी चाहिए अर्थात् नागफन की आकृति बनानी चाहिए।

यथा-

मनुष्य तीर्थोच्चं कृत्वा पितृतीर्थोदकं व्रजेत्।
नामितं करपृष्ठंतु सुव्यक्ताङ्गुलि मोक्षणम्।।

वेद मंत्र उच्चारण करते समय मन्त्रान्त में प्रयुक्त होने वाले हल् वर्ण यथा- क् ट् ण् ङ् इत्यादि के उपस्थित होने पर तर्जनी अंगुली को अपनी ओर झुकाना चाहिये। प् हल् वर्ण प्राप्त होने पर पाँचों अंगुलियों को एक साथ जोड़ना चाहिये। त् हल् वर्ण होने पर तर्जनी एवं अंगुष्ठ के अग्रभाग गोलाकृति बनानी चाहिए। न् हल् वर्ण होने पर तर्जनी से अंगुठ के नाखून को स्पर्श करना चाहिये। म् हल् वर्ण होने पर मुठ्ठी बाँधना चाहिये।

यथा-

मुष्ट्याकृतिर्मकारे स्यान्नकारे तु नखग्रहः।
ककारान्ते टकारान्ते ङणे तर्जनिकां नमेत्।
पंचागुल्यं पकारे च तकारे कुण्डलाकृतिः।।
कूर्माङ्गानीव संहृत्य चेष्टां दृष्टिं दृढ़ं मनः।
स्वस्थः प्रशान्तो निर्भीतो वर्णानुच्चारयेत् बुधः।।

ゖ- ꣳ ऐसी आकृति मंत्रभाग में आने पर इसका उच्चारण "गुं" ऐसा करना चाहिये एवं तर्जनी अंगुली को अंगुष्ठ से दाबकर हस्त संचालन करना चाहिये। यह ह्रस्व 'गुं' है।

९-ठँ ऐसी आकृति मंत्र भाग में आने पर इसका उच्चारण ''गूँ'' यह दीर्घ ''गूँ'' है ऐसा करना चाहिये एवं र्जनी अंगुली को सीधा करना चाहियें

यथा- **अङ्गुष्ठाकुञ्चनं लघावनुस्वारे त्वपाɷरसम्।**
दीर्घेरङ्गे च तर्जन्याः प्रसारः परिकीर्तितः।।

विसर्गः

- ꣳ मंत्र भाग में इस आकृति वाले विसर्ग पर निष्ठिका अंगुली निकालकर संकेत करना चाहिए।
- ꣴ मन्त्र भाग में इस आकृति वाले विसर्ग में दायें हाथ के कनिष्ठिका एवं तर्जनी अंगुली निकालकर अनामिका एवं मध्यमा को मोड़कर उच्चारण करना चाहिये।
- मंत्र भाग के नीचे (L)इस आकृति वाले स्वर का संकेत करते समय हाथ को भूमि की ओर झुकाकर अपनी ओर हाथ को अन्दर खींचकर पुनः पूर्ववत् सम्मुख करना चाहिये।
- मंत्रभाग के नीचे (w) इस आकृति वाले स्वर का संकेत करते समय हाथ को थोड़ा दार्यी ओर झुकाकर पुनः हाथ को उल्टा कर संकेत करना चाहिए। इस संकेत के अनन्तर अधिकतर उदात्त स्वर आता है यह ध्यान अवश्य रखें। हस्त संचालन करते समय हाथ का विश्राम नीचे एवं दार्यी ओर नहीं होता। अनुदात्त स्वर में मंत्रों के नीचे एक लाईन होती है। नीचे लाईन अंकित मंत्र को उच्चचारण कर हस्त संचालन करते समय हाथ हमेशा दार्यी ओर अथवा नीचे की ओर रहता है। मंत्रभाग में दो अथवा दो से अधिक अक्षरों के नीचे ऐसी रेखा होने पर अन्तिम रेखा से पूर्व तक हाथ बीच भाग में रखना चाहिये। मंत्रों के ऊपर एक खड़ी पायी होने पर हाथ मध्य भाग में रखना चाहिये।

उच्चारण

मन्त्र में किसी भी अक्षर के ऊपर अंकित अनुस्वार का उच्चारण अग्रिम अक्षरवाले स्वामी वर्णों के अनुसार करना चाहिये। यथा - अंक = अङ्क, घंटी = घण्टी, मन्त्र = मन्त्र, जंभे = जम्भे इत्यादि ध्यातव्य है। इसी तरह - -''**य**'' इस का उच्चारण ''**ज**'' के समान करना चाहिये। ''**ज्ञ**'' इसका उच्चार ''**द्न्य**'' ''**न्य**'' के समान करना चाहिये। ''**ष**'' का उच्चारण ''**ख**'' के समान करना चाहिये। ऋकार युक्त अक्षरों का उच्चारण ''**र**'' की तरह करना चाहिये। यथा- पृथिवी-प्रेथिवी इत्यादि ध्यातव्य है। इसी तरह ''**ष**'' मूर्धन्य ष का उच्चार ''**ट**'' वर्ग को छोड़कर अन्यत्र अच् रहित होने पर ''**ख**'' के समान होता है ट वर्ग युक्त होने पर ''**ष**'' ऐसा ही उच्चारण करना चाहिये। यथा- **व्विष्णोः कर्म्माणि, देष्मैतद्धः।** इसी तरह श, ष, ह के ऊपर आने वाले रेफ (र्) का उच्चार ''**रे**'' एकमात्रिक ह्रस्व के समान करना चाहिये। श, ष, ह से पूर्व आधा ''**ल्**'' का उच्चारण भी ''**ले**'' के समान करना चाहिये। यथा- ''**शतवल्शाव्विरोहतात्** (शतवलेशा) ऐसा उच्चचारण होता है। प्लुत वर्ण का चिन्ह-**ॅ१ ,ॅ२ , ॅ३ ,** ऐसा होता है। ॅ१ ,ॅ२, ऐसा चिन्ह मन्त्र भाग में होने पर तर्जनी अंगुली निकालकर संकेत करते हें, परन्तु ॅ३ ऐसे लुप्त चिन्ह पर हस्त स्वर नहीं निकालते हैं। कहीं-कहीं ॅ३ ऐसे चिन्ह में तर्जनी एवं मध्यमा दोनों अंगुली को निकालने की परम्परा भी दृष्टिगोचर होती ह। अच (स्वर) वर्णों के मध्य ऽ ऐसा चिन्ह जो होता है इस चिन्ह के प्राप्त होने पर अर्धाक्षर काल विराम करना चाहिए।



Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh